अहवाले बर्ज़ख़

मौलाना मुहम्मद आशिक़ इलाही बुलन्दशहरी (रह०)

अहवाले बर्ज़ख़

मौलाना मुहम्मद आशिक़ इलाही बुलन्दशहरी (रह०)

अहवाले बर्ज़ख़

Ahwale Barzakh

मौलाना मुहम्मद आशिक़ इलाही बुलन्दशहरी (रह०)

प्रकाशन : 2012

ISBN: 81-7101-478-X

TP-142-12

Published by Mohammad Yunus for

IDARA IMPEX

D-80, Abul Fazal Enclave-I, Jamia Nagar
New Delhi-110 025 (India)
Tel.: 2695 6832 Fax: +91-11-6617 3545
Email: **sales@idaraimpex.com**
Visit us at: **www.idarastore.com**

Designed & Printed in India

Typesetted at: **DTP Division**
IDARA ISHA'AT-E-DINIYAT
P.O. Box 9795, Jamia Nagar, New Delhi-110025 (India)

विषय-सूची

अपनी बात

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ عَلٰى خَيْرِ خَلْقِهٖ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ وَعَلٰى اٰلِهٖ وَصَحْبِهٖ هُدَاةِ الدِّيْنِ الْمَتِيْنِ وَمَنْ تَبِعَهُمْ بِاِحْسَانٍ اِلٰى يَوْمِ الدِّيْنِ ط

अल्हमदु लिल्लाहि रब्बिल आ़लमीन वस्सलातु अ़ला ख़ैरि ख़ल्क़िही सैयिदिना मुहम्मदिन सैयिदिल मुर्सलीन व अ़ला आलिही व सहबिही हुदातिद्दीनिल मतीन व मन तबि अ़हुम बिइहसानिन इला यौमिद्दीन।

हज़रत मुहम्मद ﷺ की हदीसों को पढ़ने से साफ़ मालूम होता है कि मरने वाले को देखने में हम भले ही मुर्दा समझते हैं लेकिन सच तो यह है कि वह ज़िंदा होता है। यह दूसरी बात है कि उसकी ज़िंदगी हमारी इस ज़िंदगी से बिल्कुल अलग होती है।

प्यारे नबी ﷺ ने फ़रमाया है कि मुर्दे की हड्डी तोड़ना ऐसा ही है जैसे ज़िंदगी में उसकी हड्डी तोड़ी जाए। एक बार प्यारे नबी ﷺ ने हज़रत उम्रू बिन हज़्म ؓ को एक क़ब्र से तकिया लगाये हुए बैठे देखा तो फ़रमाया कि इस क़ब्र वाले को तकलीफ़ न दो।[1]

जब इंसान मर जाता है तो इस दुनिया से निकल कर बर्ज़ख़ की दुनिया में चला जाता है चाहे अभी उसे क़ब्र में भी न रखा जाए या आग में भी न जलाया जाये। उसमें समझ होती है। अल्लाह के रसूल ﷺ ने

1. मिश्कात शरीफ़

फ़रमाया कि जब मुर्दा (चारपाई वग़ैरह) पर रख दिया जाता है और उसके बाद क़ब्रिस्तान ले जाने के लिए लोग उसे उठाते हैं तो अगर वह नेक था तो कहता है कि मुझे जल्द ले चलो और अगर वह नेक नहीं था तो घर वालों से कहता है कि हाय मेरी बर्बादी! मुझे कहां ले जाते हो? (फ़िर फ़रमाया) कि इंसान के सिवा हर चीज़ उसकी आवाज़ सुनती है। अगर इंसान उसकी आवाज़ सुन ले तो ज़रुर बेहोश हो जाये।[1]

मौत के बाद से क़ियामत क़ायम होने तक हर आदमी पर जो ज़माना गुज़रता है उसको **बर्ज़ख़** कहा जाता है। **बर्ज़ख़** का मतलब है पर्दा और आड़। चूंकि यह ज़माना दुनिया और आख़िरत के दर्मियान एक आड़ होता है इसलिए उसे **बर्ज़ख़** कहते हैं।

चूंकि इंसान खुद अपने मुर्दों को दफ़न किया करते हैं इसलिए हदीसों में बर्ज़ख़ के आराम या अज़ाब के बारे में क़ब्र ही के लफ़्ज (शब्द) आते हैं। इसका यह मतलब नहीं कि जिन इंसानों को आग में जला दिया जाता है या पानी में बहा दिया जाता है, वह बर्ज़ख़ में ज़िंदा नहीं रहते। सच तो यह है कि अज़ाब व सवाब का तअ़ल्लुक़ रूह से है और यह बात भी याद रहे कि अल्लाह तआ़ला जले हुए ज़र्रों (कणों) को भी जमा करके अज़ाब व सवाब देने की ताक़त रखता है। हदीस शरीफ़ में आया है कि (पहले ज़माने में) एक आदमी ने बहुत ज़्यादा गुनाह किये। जब वह मरने लगा तो उसने अपने बेटों को वसीयत की कि जब मैं मर जाऊं तो मुझे जला देना और मेरी राख को आधी धरती में बिखेर देना और आधी समुद्र में बहा देना। यह वसीयत करके उसने कहा कि अगर ख़ुदा मुझ पर क़ादिर हो गया और उसने इसके बावजूद भी मुझे ज़िंदा कर लिया तो मुझे ज़रूर ही ज़बरदस्त अज़ाब देगा जो (मेरे अलावा) सारी दुनिया में और किसी को न देगा। जब वह मर गया तो उसके बेटों ने ऐसा ही किया जैसा कि उसने वसीयत की थी। फिर अल्लाह तआ़ला ने समुद्र को हुक्म दिया कि इस आदमी के जिस्म के ज़र्रों को जमा

---

1. बुख़ारी शरीफ़

कर दो। समुद्र ने अपने अंदर के सारे ज़र्रों को जमा कर दिया और इसी तरह धरती को भी हुक्म दिया। उसने भी उस आदमी के जिस्म के सारे ज़र्रों को जमा कर दिया। सारे ज़र्रे जमा फ़रमाकर अल्लाह तआ़ला ने उसे ज़िंदा फ़रमा दिया। फिर उस से फ़रमाया कि तूने ऐसी वसीयत क्यों की? उसने अ़र्ज़ किया, ऐ मेरे पालनहार! तेरे डर से मैंने ऐसा किया और आप ख़ूब जानते हैं। इस पर अल्लाह तआ़ला ने उसे बख़्श दिया।[1]

हदीस शरीफ़ की रिवायत से यह भी मालूम होता है कि मोमिन बंदे बर्ज़ख़ में एक दूसरे से मुलाक़ात भी करते हैं और इस दुनिया से जाने वाले से यह भी पूछते हैं कि फ़्लां का क्या हाल है और किस हालत में है।

हज़रत सईद बिन जुबैर फ़रमाते हैं कि जब मरने वाला मर जाता है तो बर्ज़ख़ में उसकी औलाद उसका इस तरह स्वागत करती है जैसे दुनिया में किसी बाहर से आने वाले का स्वागत किया जाता है। और हज़रत साबित बिनानी (रह०) फ़रमाते थे कि जब मरने वाला मर जाता है तो बर्ज़ख़ की दुनिया में उसके रिश्तेदार-नातेदार जो पहले मर चुके हैं, उसे घेर लेते हैं और वे आपस में मिलकर उस ख़ुशी से भी ज़्यादा ख़ुश होते हैं जो दुनिया में किसी बाहर से आने वाले से मिलकर होती है।[2]

हज़रत क़ैस बिन क़बीसा फ़रमाते हैं कि अल्लाह के रसूल ﷺ ने फ़रमाया कि जो आदमी ईमान वाला नहीं होता, उसे मुर्दों से बात-चीत करने की इजाज़त नहीं दी जाती। किसी ने अ़र्ज़ किया, ऐ अल्लाह के रसूल! क्या मुर्दे बात-चीत भी करते हैं? फ़रमाया, हां। और एक दूसरे से मुलाक़ात भी करते हैं।[3]

हज़रत आ़इशा (रज़ि०) फ़रमाती हैं कि अल्लाह के रसूल ﷺ ने फ़रमाया कि जो आदमी अपने (मुसलमान) भाई की (क़ब्र की) ज़ियारत (दर्शन) करता है और उससे मानूस (परिचित) होता है, यहां तक कि ज़ियारत करने वाला उठकर चला जाता है।[4]

---

1. बुख़ारी व मुस्लिम शरीफ़ 2. इब्ने अबिद्दुन्या
3. इब्ने हब्बान 4. इब्ने अबिद्दुन्या

हज़रत उम्मे बिश्र (रजि०) फ़रमाती हैं कि अल्लाह के रसूल ﷺ से मैंने अ़र्ज़ किया कि ऐ अल्लाह के रसूल! क्या मुर्दे आपस में एक दूसरे को पहचानते हैं? आपने फ़रमाया, तेरा भला हो! रूहे मुतमइन्नः (वह रूह जिसे इत्मीनान हासिल हो) जन्नत में हरे परिंदों की शक्ल में होती है (अब तू ख़ूब समझ ले) कि परिंदे अगर आपस में एक दूसरे को पहचानते हैं तो रूहें भी आपस में एक दूसरे को पहचानती हैं।[1]

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी ؓ कहते हैं कि अल्लाह के रसूल ﷺ ने फ़रमाया कि जो आदमी क़ुरआन मजीद पढ़ना शुरू करे और पूरा किये बिना मर जाए तो क़ब्र में एक फ़रिश्ता उसे क़ुरआन शरीफ़ पढ़ाता है। चुनांचे वह अल्लाह से इस हाल में मुलाक़ात करेगा कि उसे पूरा क़ुरआन मजीद हिफ़्ज़ (याद) होगा।[2]

जो लोग भले कामों में ज़िंदगी बिताते हैं और वह मरने के बाद की ज़िंदगी का यक़ीन रखते हैं। इस दुनिया में उनका मन नहीं लगता और मौत को यहां की ज़िंदगी के मुक़ाबले में अच्छा समझते हैं। और जो लोग यहां की ज़िंदगी को बुराईयों में गुज़ारते हैं, वे मौत से घबराते हैं। सुलैमान बिन अ़ब्दुल मलिक ने अबू हाज़िम (रह०) से पूछा कि यह बताइए कि हम मौत से क्यों घबराते हैं? उन्होंने फ़रमाया, इसलिए घबराते हैं कि तुमने दुनिया को आबाद और आख़िरत को बर्बाद किया है; इसलिए आबादी से वीराने में जाना पसंद नहीं करते। सुलैमान ने कहा : सही है, आप सच कहते हैं।

जिस आदमी को क़ब्र की ज़िंदगी का यक़ीन हो और अपने अच्छे कामों के बदले वहां अच्छे हाल में रहने की उम्मीद हो और यह समझता हो कि इस दुनिया के दोस्त-साथी-रिश्तेदार को छोड़कर चला जाऊंगा तो बर्ज़ख़ में रिश्तेदार और जान पहचान वाले मिल जायेंगे तो फिर मौत से क्यों धबराये और इस जिंदगी को बर्ज़ख़ की ज़िन्दगी पर क्यों बेहतर समझे? अल्लाह के

1. इब्ने सअ़्द
2. शौक़े वतन

रसूल ﷺ ने फ़रमाया :

يُحِبُّ الْاِنْسَانُ الْحَيٰوةَ وَالْمَوْتُ خَيْرٌ لِّنَفْسِهٖ

युहिब्बुल इंसानुल हया त वल मौतु ख़ैरुल्लि नफ़्सिः

'इंसान ज़िंदगी को प्यारा रखता है हालांकि मौत उसके लिए बेहतर है (शर्त यह कि वह ईमान वाला हो और उसके काम अच्छे हों।)

कुछ रिवायतों में यह भी है कि प्यारे नबी ﷺ ने मौत को मोमिन का तोहफ़ा बताया है[1]। और यह भी फ़रमाया है कि इंसान मौत को नापसंदीदा समझता है, हालांकि मौत फ़ित्नों से बेहतर है कि जितनी जल्दी मौत आ जाएगी, उतनी ही जल्दी दुनिया के फ़ित्नों से बच जायेगा।[2]

हज़रत अनस ﵁ फ़रमाते हैं अल्लाह के रसूल ﷺ ने फ़रमाया कि इंसान के दुनिया से इंतिक़ाल करने की मिसाल ऐसी है जैसे बच्चा माँ के पेट की तंगी और अंधेरे से निकल कर दुनिया के आराम व राहत में आ जाता है।[3] मतलब यह कि मोमिन के लिए मौत बड़ी अच्छी चीज़ है। बस शर्त यह है कि नेक अमल करने वाला हो और उसने अपने और अल्लाह के दर्मियान मामला ठीक रखा हो। जो बंदे नेक कामों में जिंदगी गुज़ारते हैं वे मौत को इस ज़िंदगी पर बढ़ावा देते हैं और यहां मुसीबतों और परेशानियों से निकल कर जल्द-से- जल्द अमन व अमान और राहत व चैन वाली हमेशा की ज़िंदगी में जाना चाहता है।

हज़रत अबू हुरैरः ﵁ ने एक बार किसी से पूछा कि कहां जा रहे हो? उन्होंने जवाब दिया कि बाज़ार का इरादा है। फ़रमाया : हो सके तो मेरे लिए मौत ख़रीदते लाना। मतलब यह था कि हमें इस दुनिया में रहना पंसद नहीं

---

1. मिश्कात
2. अहमद
3. हकीम तिर्मिज़ी

है। अगर क़ीमत से भी मौत मिले तो ख़रीद लें।

हज़रत ख़ालिद बिन मअ्दान ﷺ फ़रमाते थे कि अगर कोई आदमी कहे कि जो आदमी सबसे पहले फ़्लां चीज़ छू ले तो वह उसी वक़्त मर जाएगा तो मुझसे पहले कोई भी उस चीज़ को नहीं छू सकता। हां, अगर मुझसे ज़्यादा कोई दौड़ सकता हो और मुझसे पहले पहुंच जाए तो और बात है।[1]

اَللّٰهُمَّ حَبِّبِ الْمَوْتَ اِلَيَّ وَاِلٰى مَنْ يَّعْلَمُ اَنَّ سَيِّدَنَا مُحَمَّدًا صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَبْدُكَ وَرَسُوْلُكَ.

अल्लाहुम्म म हब्बिबिल मौ त इलै य व इला मैंय्यअ्लमु अन्न न सैयिदना मुहम्मदन सल्लल्लाहु तआला अ़लैहि व सल्लम अ़ब्दु क व रसूलुक।

इस प्राक्कथन के बाद अब हम अहवाले बर्ज़ख़ लिखना शुरू करते हैं।

والله ولی التوفیق وهو خیرعون وخیر رفیق

वल्लाहु वलीय्युत्तौफ़ीक़ि व हु व ख़ैरु औनिन व ख़ैरुर्रफ़ीक़

---

1. शर्हुस्सुदूर

بسم الله الرحمن الرحيم

मोमिन का रुत्बा
मौत के वक़्त और मौत के बाद

हजरत बरा बिन आ़ज़िब رضي الله عنه फ़रमाते हैं कि एक दिन हम अल्लाह के रसूल ﷺ के साथ एक अंसारी के जनाज़े में क़ब्रिस्तान गये। जब क़ब्र तक पहुंचे तो देखा कि अभी क़ब्र नहीं बनायी जा सकी है; इस वजह से नबी करीम ﷺ बैठ गये और हम भी आपके आस-पास (अदब के साथ) इस तरह बैठ गये कि जैसे हमारे सरों पर परिंदे बैठें हैं।[1]

अल्लाह के रसूल ﷺ के मुबारक हाथ में एक लकड़ी थी जिससे ज़मीन कुरेद रहे थे (जैसे कोई दुखी आदमी किया करता है) आपने मुबारक सर उठाकर फ़रमाया कि क़ब्र के अ़ज़ाब से पनाह मांगो। दो या तीन बार यही फ़रमाया। फिर फ़रमाया कि बेशक जब मोमिन बंदा दुनिया से जाने और आख़िरत का रुख़ करने को होता है तो उसकी तरफ़ आसमान से फ़रिशते आते हैं, जिनके सफ़ेद चेहरे सूरज की तरह रौशन होते हैं। उनके साथ जन्नती कफ़न होता है और जन्नत की ख़ुश्बू होती है। यह फ़रिश्ते इतने होते हैं कि जहां तक उसकी नज़र पहुंचे, वहां तक बैठ जाते हैं। फिर (हज़रत) **म ल कुल मौत** (मौत का फ़रिश्ता) तशरीफ़ लाते हैं यहां तक कि

1. यानि इस तरह ख़ामोश, दम साधे बैठ गये जैसे कि हम में हरकत ही नहीं रही। परिंदा बे-हरकत चीजों पर बैठता है। सहाबा किराम (रज़ि०) की यह हालत हदीस पाक सुनने के वक़्त ऐसी ही होती थी।

उसके पास बैठ जाते हैं और फ़रमाते हैं कि ऐ पाक रूह! अल्लाह की मग़्फ़िरत और उसकी रज़ामंदी की तरफ निकल कर चल। चुनांचे उसकी रूह इस तरह आसानी से निकल आती है जैसे मशकीज़ा (छोटी मशक) में से (पानी का) क़तरा बहता हुआ बाहर आ जाता है। तो उसे हज़रत म ल कुल मौत ؑ ले लेते हैं। उनके हाथ में लेते ही दूसरे फ़रिश्ते (जो दूर तक बैठे होते हैं) पल भर भी उनके हाथ में नहीं छोड़ते, यहां तक कि उसे लेकर उसी कफ़न और ख़ुश्बू में रख कर आसमान की तरफ़ चल देते हैं। उस ख़ुश्बू के बारे में ईशाद फ़रमाया कि ज़मीन पर जो अच्छी से अच्छी ख़ुश्बू पायी गई है, उस-जैसी वह ख़ुश्बू होती है।

फिर फ़रमाया कि उस रूह को लेकर फ़रिश्ते (आसमान की तरफ़) चढ़ने लगते हैं और फ़रिश्ते की जिस टोली पर भी इनका गुज़र होता है, वह कहते हैं कि यह कौन पाक रूह है। वह उसका अच्छे से अच्छा नाम लेकर जवाब देते हैं। जिससे दुनिया में बुलाया जाता था कि फ़्लां का बेटा फ़्लां है। इसी तरह पहले आसमान तक पहुंचते हैं और आसमान का दरवाज़ा खोलने के लिए कहते हैं और आसमान का दरवाज़ा खोल दिया जाता है और वह इस रूह को लेकर ऊपर चले जाते हैं; यहां तक कि सातवें आसमान पर पहुंच जाते हैं। हर आसमान के क़रीबी फ़रिश्ते दूसरे आसमान तक उसे विदा करते हैं। जब सातवें आसमान तक पहुंच जाते हैं तो अल्लाह तआ़ला फ़रमाते हैं कि मेरे बन्दे को 'इल्लीयीन की किताब' (नेकों के दफ़्तर) में लिख दो और उसे ज़मीन पर वापस ले जाओ। क्योंकि मैंने इंसान को ज़मीन ही से पैदा किया है और उसी में लौटा दूंगा और उसी से उनको दोबारा निकाल लूंगा। चुनांचे उसकी रूह उसके जिस्म में वापस कर दी जाती है। इसके बाद दो फ़रिश्ते (मुन्किर और नकीर) उसके पास आते हैं, जो आकर उसे बिठाते हैं और उससे सवाल करते हैं कि तेरा रब कौन है। वह जवाब देता है मेरा रब अल्लाह है। फिर उससे पूछते हैं कि तेरा दीन क्या है? वह जवाब देता है मेरा दीन इस्लाम है। फिर उससे पूछते हैं कि यह कौन साहब हैं जो तुम्हारे अंदर भेजे गये? वह कहता है कि वह अल्लाह के रसूल ﷺ हैं। फिर उससे

पूछते हैं कि तेरा अ़मल क्या है? वह कहता है कि मैंने अल्लाह की किताब पढ़ी सो उस पर ईमान लाया और उसकी तस्दीक़ की। इसके बाद एक मुनादी (आवाज़ देने वाला) आसमान से आवाज़ देता है (जो अल्लाह का मुनादी है कि मेरे बन्दे ने सच कहा सो उसके लिए जन्नत के बिछौने बिछा दो और उसको जन्नत के कपड़े पहना दो और उसके लिए जन्नत की तरफ़ दरवाज़ा खोल दो। चुनांचे जन्नत का दरवाज़ा खोल दिया जाता है जिसके ज़रिये जन्नत का आराम और ख़ुश्बू भीतर आती रहती है और उसकी क़ब्र इतनी फैला दी जाती है जहां तक उसकी नज़र पहुंचे। इसके बाद बहुत ही ख़ूबसूरत चेहरे वाला, बेहतरीन कपड़ों वाला, (और) पाक ख़ुश्बू वाला एक आदमी उसके पास आकर कहता है कि ख़ुशी की चीज़ों की ख़ुशख़बरी सुन ले। यह तेरा वह दिन है जिसका तुमसे वादा किया जाता था। वह कहता है तुम कौन हो? तुम्हारा चेहरा सच में चेहरा कहने के क़बिल है और इस क़बिल है कि अच्छी ख़बर लाए। वह कहता है मैं तेरा भला अ़मल हूं।

इसके बाद वह (ख़ुशी में) कहता है कि ऐ रब! क़ियामत क़ायम फ़रमा। ऐ रब! क़ियामत क़ायम फ़रमा ताकि मैं[1] अपने बाल-बच्चों और माल में पहुंच जाऊं।

काफ़िर की ज़िल्लत

और बिलाशुबहः जब काफ़िर बन्दा दुनिया से जाने और आख़िरत का रुख़ करने को होता है तो स्याह चेहरों वाले फ़रिश्ते आसमान से उसके पास आते हैं, जिनके साथ टाट होते हैं और उसके पास इतनी दूर तक बैठ जाते हैं जहां तक उसकी नज़र पहुंचती है। फिर म ल कुल मौत तशरीफ़ लाते हैं, यहां तक कि उसके सर के पास बैठ जाते हैं, फिर कहते हैं कि ऐ ख़बीस (दुष्ट) जान, अल्लाह की नाराज़ी की तरफ़ निकल। म ल कुल मौत का यह हुक्म सुनकर रूह उसके जिस्म में इधर उधर भागी फिरती है। इसलिए

1. इससे जन्नत की हूरें और जन्नत की नेमतें मुराद हैं।(मिर्क़ात)

म ल कुल मौत उसकी रूह को उसके जिस्म से इस तरह निकालते हैं कि जैसे बोटियां भुनने की सीख़ भीगे हुए ऊन से साफ़ की जाती है (यानि काफ़िर की रूह को जिस्म से ज़बरदस्ती इस तरह निकालते हैं जैसे भीगा हुआ ऊन कांटेदार सीख़ पर लिपटा हुआ हो और उसको ज़ोर से खींचा जाए) फिर उसकी रूह को म ल कुल मौत (अपने हाथ में) ले लेते हैं और उनके हाथ में लेते ही दूसरे फ़रिश्ते पलक झपकने के बराबर भी उनके पास नहीं छोड़ते। यहां तक कि फ़ौरन उनसे लेकर टाटों से लपेट देते हैं। (जो उनके पास होते हैं) और उन टाटों मे ऐसी बदबू आती है जैसी कभी किसी बहुत सड़ी हुई मुर्दा लाश से धरती पर बदबू फूटी हो। वे फ़रिश्ते उसे लेकर आसमान की तरफ़ चढ़ते हैं। और फ़रिश्तों के जिस गिरोह पर भी पहुंचते हैं। वे कहते हैं कि यह कौन ख़बीस रूह है? वे उसका बुरे से बुरा नाम लेकर कहते हैं, जिससे वह दुनिया में बुलाया जाता था कि फ़्लां का बेटा फ़्लां है, यहां तक कि वह उसे लेकर पहले आसमान तक पहुंचते हैं और दरवाज़ा खुलवाना चाहते हैं, मगर उसके लिए दरवाज़ा नहीं खोला जाता है। जैसा कि अल्लाह जल्ल ल शानुहू ने फ़रमाया:—

لاَ تُفَتَّحُ لَهُمْ اَبْوَابُ السَّمَآءِ وَلاَ يَدْخُلُوْنَ الْجَنَّةَ حَتّٰى يَلِجَ الْجَمَلُ
فِىْ سَمِّ الْخِيَاطِ (سورۂ اعراف)

ला तुफ़त्तहु लहुम अब्वाबुस्समाइ व ला यद्ख़ुलू नल जन्न न त हत्ता यलि जल ज म लु फ़ी सम्मिल ख़ियात।

—सूरः आराफ़

'उनके लिए आसमान के दरवाज़े न खोले जाएंगें। और न वे कभी जन्नत में दाख़िल होंगे। जब तक ऊंट सूई क़े नाके में न चला जाए (और ऊंट सूई के नाके में जा नहीं सकता इसलिए वे भी जन्नत में नहीं जा सकते)।'

फिर अल्लाह तआला फरमाते हैं कि इसको सिज्जीन की किताब (बुरे

आमालनामे के दफ़्तर) में लिख दो, जो सबसे नीचे ज़मीन में है। चुनांचे उसकी रूह (वहां से) फेंक दी जाती है। फिर हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने यह आयत पढ़ी :

وَمَنْ يُّشْرِكْ بِاللّٰهِ فَكَاَنَّمَا خَرَّ مِنَ السَّمَاءِ فَتَخْطَفُهُ الطَّيْرُ اَوْ تَهْوِىْ بِهِ الرِّيْحُ فِىْ مَكَانٍ سَحِيْقٍ (سورہ حج)

व मैंयुश्रिक बिल्लाहि फ़ क अन्नमा ख़र्र र मिनस्समाइ फ़ तख़ त फ़ुहुत्तैरु औ तह्वी बिहिर्रीहु फ़ी मकानिन सहीक़।

—सूरः हज

'और जो आदमी अल्लाह के साथ शिर्क करता है, गोया वह आसमान से गिर पड़ा। फिर चिड़ियों ने उसकी बोटियों नोच लीं या हवा ने उसको बहुत दूर की जगह में ले जाकर फेंक दिया।'

फिर उसकी रूह उसके जिस्म में लौटा दी जाती है और उसके पास दो फ़रिश्ते (मुन्किर और नकीर) आते हैं और बिठा कर पूछते हैं कि तेरा रब कौन है? वह कहता है, हाय! हाय! मुझे पता नहीं। फिर उससे पूछते हैं कि तेरा दीन क्या है? वह कहता है, हाय! हाय! मुझे पता नहीं। फिर उससे पूछते हैं कि यह आदमी कौन हैं, जो तुम्हारे पास भेजे गये? वह कहता है, हाय! हाय! मुझे पता नहीं। जब यह सवाल और जवाब हो चुकते हैं तो आसमान से एक मुनादी आवाज़ देता है कि इसने झूठ कहा।[1] इसके नीचे आग बिछा दो और इसके लिए दोज़ख़ का दरवाज़ा खोल दो। चुनांचे दोज़ख़ का दरवाज़ा खोल दिया जाता है और दोज़ख़ की गर्मी और गर्म लू आती

1. यानि इसको अपने रब की ख़बर है लेकिन यह उसको मानता न था और जिस दीन (धर्म) पर था उसे भी जानता है और हज़रत मुहम्मद ﷺ के नबी होने को भी जानता है लेकिन अज़ाब से बचने के लिए अपने को अनजान ज़ाहिर कर रहा है।

रहती है और क़ब्र उस पर तंग कर दी जाती है, यहां तक कि उसकी पसलियां भिंचकर आपस में इधर की उधर चली जाती हैं और उसके पास एक आदमी आता है जो बद-सूरत और बुरे कपड़े पहने हुए होता है। उसके जिस्म से बुरी बदबू आती है । वह आदमी उससे कहता है कि मुसीबत की ख़बर सुन लो। यह वह दिन है जिसका तुझसे वादा किया जाता था। वह कहता है, तू कौन है? सच में, तेरी शक्ल ऐसी है कि तू बुरी ख़बर सुनाये। वह कहता है कि में तेरा बुरा अ़मल हूं। यह सुनकर वह (इस डर से कि में क़ियामत में यहां से ज़्यादा अ़ज़ाब में गिरफ़्तार हूंगा) यह कहता है कि 'ऐ रब! क़ियामत क़ायम न कर।'[1]

एक रिवायत में है कि जब मोमिन की रूह निकलती है तो आसमान और ज़मीन के बीच का हर फ़रिश्ता और वे सब फ़रिश्ते जो आसमान में हैं, सब उस पर रहमत भेजते हैं और उसके लिए आसमान के दरवाज़े खोल दिए जाते हैं और वह दरवाज़े वाले अल्लाह से दुआ़ करते हैं कि उसकी रूह को हमारे तरफ़ ले कर चढ़ाया जाए और काफ़िर के बारे में फ़रमाया कि उसकी जान रगों समेत निकाली जाती है और आसमान और ज़मीन के बीच का हर फ़रिश्ता और वह सब फ़रिश्ते जो आसमान में हैं, सबके सब लानत भेजते हैं और उसके लिए आसमान के दरवाज़े बंद कर दिए जाते हैं और हर दरवाज़े वाले अल्लाह से दुआ़ करते हैं कि उसकी रूह को हमारी तरफ़ से लेकर न चढ़ाया जाए![2]

मोमिन का क़ब्र में नमाज़ का ध्यान

हज़रत जाबिर ﷺ फ़रमाते हैं कि अल्लाह के रसूल ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि जब मोमिन को क़ब्र में दाख़िल कर दिया जाता है तो उसको ऐसा मालूम होता है, जैसे सूरज छिप रहा हो, तो जब उसकी रूह लौटाई जाती है तो आखें मलता हुआ उठकर बैठता है और (फ़रिश्तों से) कहता है

1. मिश्कात शरीफ़ 2. मिश्कात

मि मुझे छोड़ दो; मैं नमाज़ पढ़ता हूं।[1]

मुल्ला अ़ली क़ारी लिखते हैं कि गोया वह उस वक़्त अपने आप को दुनिया में ही समझता है कि सवाल और जवाब को रहने दो, मुझे फ़र्ज़ अदा करने दो; वक़्त ख़त्म हुआ जा रहा है; मेरी नमाज़ जाती रहेगी।

फिर लिखते हैं कि यह बात वही कहेगा जो दुनिया में नमाज़ का पाबंद था और उसको हर वक़्त नमाज़ का ख़्याल लगा रहता था।

इससे बे-नमाज़ियों को सबक़ हासिल करना चाहिए और अपने हाल का इससे अंदाज़ा लगायें और इस बात को ख़ूब सोचें कि जब अचानक सवाल होगा तो कैसी परेशानी होगी।

क़ब्र में मोमिन का बे-ख़ौफ़ होना और उसके सामने जन्नत पेश होना

हज़रत अबू हुरैरः ؓ फ़रमाते हैं कि अल्लाह के रसूल ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि बे-शुबहः मुर्दा अपनी क़ब्र में पहुंचकर बे-ख़ौफ़ और इत्मीनान के साथ बैठता है। फिर उससे सवाल किया जाता है कि (तू दुनिया में) किस दीन में था? वह जवाब देता है कि मैं इस्लाम में था। फिर उससे सवाल होता है कि (तेरे अ़क़ीदे में) यह कौन है, (जो तुम्हारी तरफ भेजे गये)? वह जवाब देता है कि मुहम्मद रसूलुल्लाह ﷺ हैं जो हमारे पास अल्लाह के पास से खुले-खुले मोज्ज़े लेकर आये, तो हमने उनकी तस्दीक़ की। फिर उससे पूछा जाता है कि क्या तूने अल्लाह को देखा है? वह जवाब देता है कि (दुनिया में) कोई आदमी अल्लाह को नहीं देख सकता (फिर मैं कैसे देख लेता?)

फिर उसके सामने दोज़ख़ की तरफ़ एक रौशनदान खोला जाता है (जिसके ज़रिए) वह दोज़ख़ को देखता है कि आग के अंगारे आपस में एक दूसरे को खाये जाते हैं। (जब वह दोज़ख़ का मंज़र देख लेता है) तो उससे

1. इब्ने माजा

कहते हैं कि देख अल्लाह ने तुझे किस मुसीबत से बचाया? फिर उसके सामने जन्नत की तरफ़ एक रौशनदान खोला जाता है (जिसके ज़रिए) वह जन्नत की रौनक़ और जन्नत की दूसरी चीज़ें देख लेता है। फिर उससे कहा जाता है कि यह (जन्नत) तेरा ठिकाना है। तू यक़ीन ही पर ज़िंदा रहा और यक़ीन पर ही तुझे मौत आयी और यक़ीन ही पर तू क़ियामत के दिन (क़ब्र से) उठेगा। इन्शाअल्लाह तआला (अगर अल्लाह ने चाहा)।

फिर फ़रमाया कि नाफ़र्मान डरा और घबराया हुआ अपनी क़ब्र में बैठता है। उससे सवाल होता है कि तू दुनिया में किस दीन में था? वह जवाब देता है कि मुझे पता नहीं। फिर उससे (हुज़ूर ﷺ के बारे में) सवाल होता है कि (तेरे अक़ीदे में) ये कौन हैं? वह कहता है कि इस बारे में मैंने वही कहा जो और लोगों ने कहा। फिर उसके सामने जन्नत की तरफ़ रौशनदान खोला जाता है, जिसके ज़रिए वह उसकी रौनक़ और उसके अंदर की दूसरी चीज़ें देख लेता है। फिर उससे कहा जाता है कि देख! (तूने ख़ुदा की नाफ़रमानी की) ख़ुदा ने तुझे किस नेमत से महरूम किया। फिर उसके दोज़ख़ की तरफ़ एक रौशनदान खोला जाता है जिसके ज़रिए वह दोज़ख़ को देख लेता है कि आग के अंगारे एक दूसरे को खाये जाते हैं। फिर उससे कहा जाता है कि यह तेरा ठिकाना है। तू शक ही पर ज़िंदा रहा और शक ही पर तुझे मौत आयी। और अल्लाह ने चाहा तो क़ियामत को भी इसी शक पर उठेगा।[1]

मोमिन से फ़रिश्तों का कहना कि दुल्हन की तरह सो जा और मुनाफ़िक़ व काफ़िर को ज़मीन का भींचना

हज़रत अबू हुरैरः ؓ फ़रमाते हैं कि अल्लाह के रसूल ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि जब मैयत को क़ब्र में रख दिया जाता है तो उसके पास दो फ़रिश्ते आते हैं, जिनका रंग स्याह और आंखें नीली होती हैं, जिनमें से एक

1. मिश्कात

को मुन्किर और दूसरे को नकीर कहा जाता है। वह दोनों उससे पूछते हैं कि तू क्या कहता है उन साहब के बारे में (जो तुम्हारी तरफ़ भेजे गये?) वह अगर मोमिन हैं तो जवाब देता है कि वह अल्लाह के बंदे और उसके रसूल हैं। मैं गवाही देता हूं कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद (जिसकी इबादत की जाए) नहीं और बे-शुबहः मुहम्मद रसूलुल्लाह ﷺ अल्लाह के बंदे और उसके रसूल हैं। यह सुनकर वे दोनों कहते हैं कि हम तो जानते हैं कि तू ऐसा ही जवाव देगा। फिर उसकी क़ब्र सत्तर हाथ वर्ग चौड़ी कर दी जाती है। फिर रौशन कर दी जाती है। फिर उससे कह दिया जाता है कि (अब तू) सो जा। वह कहता है कि मैं तो अपने घर वालों में (अपना हाल) बताने के लिए जाता हूं। वे कहते हैं कि (यहां आकर जाने का क़ानून नहीं है।) तू सो जा जैसा कि दुल्हन सो जाती है, जिसे उसके शौहर के सिवा कोई नहीं उठा सकता। (चुनांचे वह आराम से क़ब्र में रहता है) यहां तक कि अल्लाह उसे क़ियामत के दिन उस जगह से उठायेगा।

और अगर मरने वाला मुनाफ़िक़ (या काफ़िर) होता है तो वह मुन्किर-नकीर को जवाव देता है कि मैंने जो लोगों को कहते सुना, वही कहा (इससे ज़्यादा मैं नहीं जानता)। वे दोनों कहते हैं कि हम तो ख़ूव जानते थे कि तू ऐसा ही जवाव देगा। फिर ज़मीन से कहा जाता है कि उसको भींच दे। चुनांचे ज़मीन उसको भींच देती है, जिससे उसकी पस्लियाँ इधर की उधर चली जाती हैं। फिर वह क़ब्र के अंदर अज़ाव में रहता है, यहाँ तक कि (क़ियामत को) ख़ुदा ही उसे वहां से उठायेगा।[1]

इन हदीसों से मालूम हुआ कि ईमान वाले वर्ज़ख़ की दुनिया में इत्मीनान से होंगे और उनके होश व हवास सही रहेंगे। यहाँ तक कि उन को नमाज़ का ध्यान होगा और फ़रिश्तों के सवाल का जवाब देने में बेख़ौफ़ होंगे और जव अपना अच्छा हाल देख लेंगें तो घर वालों को ख़ुशख़बरी देने

1. तवरानी वग़ैरह, शौक़े वतन के हवाले से

के लिए फ़रिश्तों से कहेंगे कि 'मैं अभी नहीं सोता। घर वालों को ख़बर करने जाता हूं।' और बहुत ज़्यादा खुशी में अपना भला अंजाम देखकर फ़ौरन ही क़ियामत क़ायम होने का सवाल करेंगे ताकि जल्द-से-जल्द जन्नत में पहुंचें। जिस पर अल्लाह का करम हो, उसके होश व हवास बाक़ी रहते हैं और उससे अल्लाह जल्ल ल शानुहू सही जवाब दिलाते हैं। जैसा कि सूरः इब्राहीम में फ़रमाया :

يُثَبِّتُ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِالْقَوْلِ الثَّابِتِ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَفِي الْاٰخِرَةِ۔

युसब्बितुल्लाहुल्लज़ी न आमनू बिल क़ौलिस्साबिति फ़िल हयाति-द्दुन्या व फ़िल आख़िरः। *सूरः इब्राहीम*

'ईमान वालों को अल्लाह इस पक्की बात यानि (क़लिमा तैयबा) से दुनिया व आख़िरत में मज़बूत रखता है।'

हज़रत उमर ﵁ से अल्लाह के रसूल ﷺ ने फ़रमाया कि ऐ उमर 'उस वक़्त तुम्हारा क्या हाल होगा जबकि लोग तुम को क़ब्र में रखकर और मिट्टी डाल कर चले आएंगे। फिर तुम्हारे पास क़ब्र के मुम्तहिन (इम्तिहान लेने वाले) आएंगे जिनकी आवाज़ सख़्त गरज की तरह होगी और जिनकी आंखें नज़र उचक लेने वाली बिजली की तरह होंगी। सो वे तुमको हिला डालेंगे और तुमसे हाकिमों-जैसी बात-चीत करेंगे। बताओ उस वक़्त तुम्हारा क्या हाल होगा? हज़रत उमर ﵁ ने अर्ज़ किया कि ऐ अल्लाह के रसूल ﷺ! क्या उस वक़्त हमारी अक़्ल हमारे साथ होगी? आप ने इर्शाद फ़रमायाः हां! इसी तरह तुम्हारी अक़्लें तुम्हारे पास होंगी, जैसी आज हैं। यह सुनकर हज़रत उमर ﵁ ने अर्ज़ किया कि बस तो मैं निमट लूंगा।'[1]

1. तबरानी वग़ैरह, शौक़े वतन के हवाले से

बज़र्ख़ वालों का मोमिन से पूछना कि फ़्लां का क्या हाल है?

हज़रत अबू हुरैरः ﷺ रिवायत फरमाते हैं कि हज़रत रसूले ख़ुदा ﷺ ने फ़रमाया कि जब फ़रिश्ते मोमिन की रूह को लेकर (उन) मोमिनों की रूहों के पास ले जाते हैं (जो पहले से जा चुके हैं) तो वह रूहें उसके पहुंचने पर ऐसी ख़ुश होती हैं कि (इस दुनिया में) तुम भी अपने किसी ग़ायब के आने पर इतना ख़ुश नहीं होते। फिर उससे पूछते हैं कि फ़्लां का क्या हाल है? फ़्लां का क्या हाल है? फिर वे (ख़ुद ही आपस में) कहते हैं कि अच्छा अभी ठहरो, फिर पूछ लेना। छोड़ दो ज़रा आराम करने दो चूंकि दुनिया के ग़म में मुब्तला था। फिर (वह बताने लगता है कि फ़्लां इस तरह है, फ़्लां इस तरह है और) वह किसी शख़्स के बारे में कहता है जो उससे पहले मर चुका था कि वह तो मर गया। क्या तुम्हारे पास नहीं आया? यह सुनकर वे कहते हैं कि (जब वह दुनिया से आ गया और हमारे पास नहीं आया तो) ज़रूर उसको दोज़ख़ में पहुंचा दिया गया।[1]

बर्ज़ख़ वालों पर ज़िंदों के अ़मल पेश होते हैं

तबरानी की रिवायत में यह भी है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि बिला शुबहः तुम्हारे अ़मल तुम्हारे रिश्तेदारों और ख़ानदान वालों के सामने पेश किये जाते हैं जो आख़िरत में पहुंच चुके हैं। अगर तुम्हारा अ़मल नेक हो तो वे ख़ुश होते हैं और ख़ुदावन्द-करीम से दुआ़ करते हैं कि ऐ अल्लाह! यह आप का फ़ज़्ल और रहमत है सो आप अपनी नेमत इस पर पूरी फ़रमा दीजिए और इसी पर इसको मौत दीजिए और अगर बुरा अ़मल उनके सामने पेश होता है तो कहते हैं कि ऐ अल्लाह! इसके दिल में नेकी डाल दे जो तेरी रिज़ा (ख़ुशी) और तेरे क़ुर्ब[2] की वजह बन जाए।[3]

1. अहमद, नसाई
2. क़रीब होना
3. शौक़े वतन

क़ब्र का मोमिन को दबाना ऐसा होता है जैसे मां बेटे का सिर दबाती है

हज़रत सईद बिन मुसैयिब ﵁ से रिवायत है कि हज़रत आइशा (रजि०) ने हुज़ूरे अक़दस ﷺ से अ़र्ज़ किया कि ऐ अल्लाह के रसूल! जब से आपने मुन्किर-नकीर की (डरावनी) आवाज़ और क़ब्र के भींचने का ज़िक्र फ़रमाया है, उस वक़्त से मुझे किसी चीज़ से तसल्ली नहीं होती है (और दिल की परेशानी दूर नहीं होती)। आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि ऐ आइशा! मुन्किर-नकीर की आवाज़ मोमिनों के कानों में ऐसी होगी जैसे (एक सुरीली आवाज़ कानों में भली मालूम होती है जैसे) आंखों में सुरमा लगाने से आंखों को लज़्ज़त महसूस होती है और मोमिनों को क़ब्र का दबाना ऐसा होता है जैसे किसी के सिर में दर्द हो और उसकी ममता भरी मां धीरे-धीरे अपने बेटे का सिर दबाती है और वह उससे आराम व राहत पाता है और (याद रख) ऐ आइशा! अल्लाह के बारे में शक करने वालों के लिए बड़ी ख़राबी है। और वे क़ब्र में इस तरह भीचें जाएंगे जैसे अंडे पर पत्थर रखकर दबा दिया जाए।[1]

ज़मीन व आसमान का मोमिन से मुहब्बत करना और उसकी मौत पर रोना

हज़रत अनस ﵁ का ब्यान है कि अल्लाह के रसूल ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि हर इंसान के लिए आसमान के दो दरवाज़े हैं। एक दरवाज़े से उसका अ़मल चढ़ता और दूसरे दरवाज़े से उसका रिज़्क उतरता है। जब मोमिन मर जाता है तो दोनों दरवाज़े उसके (मरने पर) रोते हैं।[2]

हज़रत इब्ने उमर ﵁ हज़ूरे अक़दस ﷺ से रिवायत करते हैं कि आपने फ़रमाया बेशक जब मोमिन मर जाता है तो उसके मरने पर क़ब्रिस्तान अपने आप को सजा लेते हैं। इसलिए इनमें का कोई हिस्सा ऐसा नहीं होता,

1. शौक़ वतन के हवाले से 2. तिर्मिज़ी शरीफ़

जो यह तमन्ना न करता हो कि यह मुझ में दफ़न हो।[1]

हज़रत इब्ने अ़ब्बास ﷺ फ़रमाते थे कि मोमिन के मरने पर 40 दिन तक ज़मीन रोती है।[2]

हज़रत अ़ता अल-ख़ुरासानी ﷺ फ़रमाते थे कि बंदा ज़मीन के किसी हिस्से में सज्दा करता है; यह हिस्सा क़ियामत के दिन उसके हक़ में गवाही देगा और उसके मरने के दिन रोयेगा।[3]

सदक़ा जारिया[4] और औलाद वग़ैरह की तरफ़ से इस्तिग़फ़ार का नफ़ा

हज़रत अबू उमामा ﷺ से रिवायत है कि आंहज़रत ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि बिला शुब्हः मरने के बाद जो चीज़ें मोमिन को उसकी नेकियों से पहुंचती हैं उनमें से एक इल्म है जिसको उसने फैलाया हो या नेक औलाद छोड़ी हो या कोई क़ुरआन शरीफ़ वरसे[5] में छोड़ गया हो या मस्जिद बनवा गया हो या कोई-मुसाफ़िरख़ाना बना गया हो या नहर जारी कर गया हो या अपनी ज़िंदगी व तन्दुरुस्ती की हालत में अपने माल में से ऐसा सदक़ा कर गया हो जिसका सवाब मरने के बाद भी पहुंचता हो[6]।

और हज़रत अबु हूरैरः ﷺ से यह भी रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि बिला शुबहः अल्लाह तआ़ला नेक बन्दे का दर्जा जन्नत में बुलंद फ़रमा देगा। वह कहेगा कि ऐ ख़ुदा। यह दर्जा मुझे कैसे मिला? अल्लाह जल्ल ल शानुहू फ़रमायेंगे तेरी औलाद ने तेरे लिए इस्तिग़फ़ार की जिसकी वजह से यह मर्तबा तुझ को मिला।[7]

---

1. इब्ने अ़साकिर
2. हाकिम वग़ैरह
3. अबू नुऐम, शौक़े वतन के हवाले से
4. ऐसा सद्क़ा या भला काम जिससे लोग बराबर फ़ायदा उठाते रहें
5. विरासत
6. मिश्कात
7. मिश्कात

एक रिवायत में है कि क़ियामत के दिन कुछ आदमियों के साथ पहाड़ों के बराबर नेकियां होंगी। वह यह देखकर अ़र्ज़ करेगा कि ये मुझे कहां से मिलीं? इर्शाद होगा; तेरी औलाद के इस्तिग़फ़ार की वजह से तुझे यह दी गई है।[1]

हज़रत इब्ने अ़ब्बास ﷺ रिवायत फ़रमाते हैं कि रसूले ख़ुदा ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि मैयत अपनी क़ब्र में बस ऐसी ही (मुहताज) होती है, जैसे कोई डूबता हुआ (फिर फ़रमाया कि) वह दुआ़ के इन्तिज़ार में रहती है जो उसके बाप या माँ या भाई या दोस्त की तरफ़ से उसे पहुंच जाए। जब उसे (इनमें से किसी की) दुआ़ पहुंचती है तो सारी दुनिया और जो कुछ दुनिया में है, इस सबसे ज़्यादा उसको वह दुआ़ प्यारी होती है और बेशक ज़मीन वालों की दुआ़ अल्लाह तआ़ला क़ब्र वालों पर पहाड़ों के बराबर सवाब दाख़िल फ़रमाते हैं और बेशक ज़िंदों का हदिया मुर्दों के लिए उनके वास्ते इस्तिग़फ़ार[2] करना है।[3]

मोमिन को म ल कुल मौत का सलाम

हज़रत अनस बिन मालिक ﷺ से रिवायत है कि हज़रत रसूले करीम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि जब म ल कुल मौत ख़ुदा के मक़बूल बन्दे के पास आते हैं तो उसको सलाम करते हैं। और यों इर्शाद फ़रमाते हैं :

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا وَلِيُّ ثُمَّ فَاخْرُجْ مِنْ دَارِكَ الَّتِيْ خَرَّبْتَهَا اِلٰى دَارِكَ الَّتِيْ عَمَّرْتَهَا۔

अस्सलामु अ़लै क या वल्यियु सुम्म म फ़ख़्रुज मिन दारिकल्लती ख़र्रब्तहा इला दारिकल्लती अ़म्मर्तहा०

(शर्हुस्सुदूर)

1. शौक़े वतन के हवाले से
2. मग़्फ़िरत चाहना
3. मिश्कात

'तुम पर सलाम हो ऐ अल्लाह के दोस्त! उठो और इस घर से निकलो, (जिसे तुमने नफ़्स की ख़्वाहिशों को क़ुर्बान करके बर्बाद किया है) और उस घर को चलो जिसे तुमने (इबादत करके) आबाद किया है।'

मोमिन का दुनिया में रहने से इन्कार करना और उसको बशारत मिलना

हज़रत इब्ने जुरैज ﷺ से रिवायत है कि रसूले ख़ुदा ﷺ ने हज़रत आ़इशा (रजि०) से इर्शाद फ़रमाया कि जब मोमिन (मरते वक़्त) फ़रिश्तों को देखता है तो फ़रिश्ते उससे कहते हैं कि क्या हम तुमको दुनिया में वापस कर दें और रूह क़ब्ज़ न करें? वह कहता है, क्या मुझे ग़मों और फ़िक्रों की जगह छोड़ जाना चाहते हो? अब मैं तो नहीं रहता। मुझे अल्लाह तआ़ला के पास ले चलो।[1]

हज़रत ज़ैद बिन असलम ﷺ फ़रमाते हैं कि मौत के वक़्त मोमिन के पास फ़रिश्ते आकर उसे ख़ुशख़बरी सुनाते हैं और उससे कहते हैं कि तुम जहां जा रहे हो, वहां जाने से डरो नहीं। इसलिए उसका डर जाता रहता है और उससे यह भी कहते हैं कि दुनिया और दुनिया वालों (से जुदा होने) पर रंज न करो और जन्नत की ख़ुशख़बरी सुन लो। इसलिए वह इस हाल में मरता है कि इस दुनिया में ख़ुदा उसकी आखें ठंढी कर देता है।[2]

शहीदों से अल्लाह का ख़िताब

हज़रत मसरूक़ ताबई (रह०) रिवायत करते हैं कि हमने हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊद ﷺ से इस आयत की तफ़सीर[3] पूछी :

---

1. इब्ने जरीर वग़ैरह
2. इब्ने अबी हातिम
3. व्याख्या, टीका

وَلَا تَحْسَبَنَّ الَّذِيْنَ قُتِلُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ اَمْوَاتًا ط بَلْ اَحْيَاءٌ عِنْدَ رَبِّهِمْ يُرْزَقُوْنَ ط

व ला तह्सबन्नल्लज़ी न क़ुतिलू फ़ी सबीलिल्लाहि अम्वाता। बल् अह्याउन इन्द रब्बिहिम युर्ज़क़ून।

'और जो लोग अल्लाह की राह में क़त्ल किये गये उनको मुर्दा मत समझो, बल्कि वह ज़िंदा हैं। अपने रब के क़रीबी लोग हैं। उनको रोज़ी मिलती है।'

तो हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद ﷺ ने फ़रमाया कि हम इसकी तफ़सीर रसूले खुदा ﷺ से मालूम कर चुके हैं। फिर फ़रमाया कि शहीद की रूहें हरे रंग के परिंदों के पोटों में हैं। उनके लिए अ़र्शे इलाही के नीचे क़न्दील लटके हुए हैं। वे जहां चाहें जन्नत में चलती फिरती हैं, फिर इन क़न्दीलों में आकर ठहर जाती हैं। अल्लाह तआ़ला ने उनसे फ़रमाया कि तुम कुछ चाहते हो? उन्होंने अ़र्ज़ किया कि हम क्या चाहें? हालाकिं जहां चाहते हैं; जन्नत में चलते-फिरते हैं। चुनांचे तीन बार खुदा ने उनसे यही सवाल व जवाब फ़रमाया। सो जब उन्होंने यह समझ लिया कि जब तक हम जवाब न देंगे, सवाल होता ही रहेगा। तो उन्होंने यह अ़र्ज़ किया कि हम यह चाहते हैं कि हमारी रूहें हमारे जिस्मों में वापस कर दी जाएं यहां तक कि हम दोबारा तेरी राह में क़त्ल कर दिए जाएं। सो जब दुनिया के परवरदिगार ने उनसे मालूम कर लिया कि उनको कोई ज़रूरत नहीं तो छोड़ दिए गये (और फिर उनसे सवाल नहीं किया गया) यानी वहां की कोई चीज़ उन्होंने तलब न की और सवाल किया तो दुनिया में वापसी का सवाल किया जो क़ानून के ख़िलाफ़ है इसलिए फिर उनसे सवाल न किया गया।[1]

रूहों का हरे परिंदों के पोटों में होना शहीदों के साथ ख़ास नहीं है बल्कि दूसरे मोमिनों की रूहें भी उन परिंदों के पोटों में जन्नत की सैर करती

1. मुस्लिम शरीफ़

हैं। जैसा कि हज़रत काब बिन मालिक ﷺ की रिवायत में है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि :

ان ارواح المؤمنين فی طير خضر تعلق بشجر الجنة۔ (مشكوة)

इन्न न अर्वाहुल मुअ्मिनी न फ़ी तैरिन ख़ुज़र तअ्लुक़ु बि श ज रिल-जन्नः —*मिश्कात*

'बिला शुब्हा ईमान वालों की रूहें हरे परिंदों के अंदर होती हैं जो जन्नत के पेड़ों से खाती-पीती हैं।'

मुल्ला अ़ली क़ारी (रह०) 'मिर्क़ात शरहे मिश्कात' में लिखते हैं कि एक हदीस में है कि बिला शुब्हा ईमान वालों की रूहें परिंदों के पोटों में जन्नत के फल खाती और पानी पीती फिरती हैं और अ़र्श के नीचे सोने की क़न्दीलों में आराम करती हैं।

शहादत की तकलीफ़ चींटी के काटे के बराबर होती है

हज़रत अबू हुरैरः ﷺ से रिवायत है कि रसूले ख़ुदा ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि शहीद क़त्ल होने की तकलीफ़ बस इतनी ही महसूस करता है जैसे तुम चींटी के काटे की तकलीफ़ महसूस करते हो।[1]

क़ब्र के अ़ज़ाब की तफ़सीलात

अह्ले सुन्नत वल जमाअ़त के अक़ीदे में क़ब्र का अ़ज़ाब हक़ है। जिस तरह सालेह (नेक, भले) ईमान वालों को क़ब्र में आराम मिलता है और ख़ुशी के साथ क़ियामत तक रहना होता है। उसी तरह काफ़िरों और बदकारों को क़ब्र में अ़ज़ाव होता है। बहुत-सी हदीसों से यह बात साबित होती है।

हज़रत आइशा (रज़ि०) के पास एक यहूदी औरत आयी और उसने

1. मिश्कात शरीफ़

उनके सामने क़ब्र के अ़ज़ाब का ज़िक्र किया और कहा किः—

اَعَاذَكِ اللهُ مِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ

अ आज़किल्लाहु मिन अज़ाबिल क़ब्र।

यानि तुझे अल्लाह क़ब्र के अ़ज़ाब से पनाह में रखे।

हज़रत आइशा (रज़ि०) ने आँहज़रत ﷺ से इसके बारे में सवाल किया तो आप ﷺ ने फ़रमायाः—

نَعَمْ عَذَابُ الْقَبْرِ حَقٌّ

न अ़म अज़ाबुल क़ब्र हक्क़।

हां क़ब्र का अ़ज़ाब हक़ है

हज़रत आइशा (रजि०) फ़रमाती हैं कि इसके बाद हज़रत रसूले करीम ﷺ ने जब भी नमाज़ पढ़ी, क़ब्र के अ़ज़ाब से ज़रूर अल्लाह की पनाह मांगी।[1]

हज़रत उस्मान ग़नी ؓ जब किसी क़ब्र के पास खड़े होते तो इतना रोते कि दाढ़ी मुबारक तर हो जाती थी। सवाल किया गया कि आप जन्नत व दोज़ख़ के ज़िक्र करके नहीं रोते और क़ब्र को देखकर (इतना) रोते हैं। हज़रत उस्मान ؓ ने जवाब दिया कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया है कि बेशक क़ब्र आख़िरत की मंज़िलों में से पहली मंज़िल है, सो अगर उससे निजात पाई तो इसके बाद की मंज़िलें इससे ज़्यादा आसान हैं और अगर इससे निजात न पायी तो इसके बाद की मंज़िलें इससे ज़्यादा सख़्त हैं।[2]

क़ब्र में अ़ज़ाब देने वाले अज़दहे

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी ؓ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने

1. बुख़री व मुस्लिम
2. तिर्मिज़ी शरीफ

इर्शाद फ़रमाया कि क़ब्र में काफ़िर पर ज़रूर 99 अज़दहे मुक़र्रर कर दिए जाते हैं जो क़ियामत तक उसे डसते रहते हैं। उनके ज़हर का यह हाल है कि अगर उनमें से एक भी ज़मीन पर फुंकार मार दे तो ज़मीन बिल्कुल सब्ज़ी न उगाये।[1]

यानी उनके ज़हर का यह असर है कि उनमें से एक अज़दहा भी अगर एक बार ज़मीन की तरफ़ फुंकार मार दे तो उसके ज़हर के असर से ज़मीन में घास का एक तिनका भी उगने के क़ाबिल न रहे। आजकल के लड़ाई के सामान जैसे एटमबम वग़ैरह देखकर नबी करीम ﷺ के इस इर्शाद के समझने में ज़रा भी झिझक महसूस करने की गुंजाइश नहीं रहती।

क़ब्र में अ़ज़ाब की वजह से मैयत का चीख़ना और लोहे के गुर्ज़ों से उसका मारा जाना

हज़रत बरा बिन आ़ज़िब رضي الله عنه की एक रिवायत में है कि अल्लाह के रसूल ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि जब काफ़िर जवाब देता है कि हाय! हाय!! मुझे पता नहीं! तो आसमान से मुनादी[2] आवाज़ देता है कि इसने झूठ कहा, इसके नीचे आग बिछा दो और इसे आग का पहनावा पहना दो और इसके लिए दोज़ख़ का एक दरवाज़ा खोल दो। चुनांचे दरवाज़ा खोल दिया जाता है जिससे दोज़ख की गर्मी और सख़्त लू आती रहती है और उसकी क़ब्र तंग कर दी जाती है यहां तक कि उसकी पस्लियां इधर से उधर हो जाती हैं, फिर उसके अ़ज़ाब देने के लिए एक (अ़ज़ाब देने वाला) मुक़र्रर कर दिया जाता है जो अंधा और बहरा होता है। उसके पास लोहे का गुर्ज़ होता है, जिसकी हक़ीकत यह है कि अगर वह पहाड़ पर मार दिया जाए तो पहाड़ मिट्टी हो जाय। (फिर इर्शाद फ़रमाया कि) उस गुर्ज़ को एक बार मारता है तो उसकी आवाज़ को इंसान और जिन्नात के अलावा पूरब-पश्चिम के दर्मियान की सारी मख़्लूक़ सुनती है। एक बार मारने से वह मिट्टी हो जाता है फिर रूह

1. दारमी
2. मुनादी (आवाज़ देने वाला)

लौटा दी जाती है।[1]

बुख़ारी और मुस्लिम की एक रिवायत में है कि इस गुर्ज़ के मारे जाने से वह ज़ोर से चीख़ता है कि इंसान और जिन्नात के सिवा उसके क़रीब की हर चीज़ उसकी चीख़ व पुकार सुनती है।

सवालः यहां यह बात मालूम करने की है कि इंसानों और जिन्नों को मैयत के मारने और उसके चीख़ने की आवाज़ क्यों नहीं सुनाई जाती?

तो इसका जवाब यह है कि इंसानों और जिन्नों को बर्ज़ख़ की दुनिया से वास्ता पड़ता है। अगर उनको क़ब्र का अ़ज़ाब दिखा दिया जाए या कानों से वहां के मुसीबत के मारे हुओं की चीख़ व पुकार की आवाज़ सुना दी जाए जो ईमान ले आयें और नेक अ़मल करने लगें, हालांकि ख़ुदा के यहां ग़ैब पर ईमान मोतबर (जिसपर भरोसा किया जाए) है। सिर्फ़ रसूलुल्लाह ﷺ की बात सु नकर मानें, इसी को ईमान फ़रमाया गया है।

إِنَّ الَّذِينَ يَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ بِالْغَيْبِ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّأَجْرٌ كَبِيرٌ ۝

इन्नल्लज़ी न यख़्शौ न रब्बहुम बिलग़ैबि लहुम मग़ि फ़ रतुंव अज्रुन कबीर।

'बिला शुबहा जो लोग अपने रब से विना देखे डरते हैं, उनके लिए मग़्फ़िरत है और बड़ा अज्र है।'

अगर दोज़ख़, जन्नत और बर्ज़ख़ के हालात आंखों से दिखा दिए जाएं तो फिर 'ग़ैब पर ईमान' न रहे और सब मान लें और मोमिन हो जायें मगर ख़ुदा के यहां आंखों से देखे हुए पर ईमान लाने का एतबार नहीं है, क्योंकि उस वक़्त अ़ज़ाब के फ़रिश्ते नज़र आते हैं।

فَلَمْ يَكُ يَنْفَعُهُمْ إِيمَانُهُمْ لَمَّا رَأَوْا بَأْسَنَا (مؤمن)

1. अहमद व अबूदाऊद

फ़लम यकु यनफ़उहुम ईमानुहुम लम्मा रऔ बअ्सना।

—मोमिन

'सो उनको उनका ईमान लाना फ़ायदेमंद न हुआ जबकि उन्होंने हमारा अ़ज़ाब देख लिया।'

जब क़ियामत को उठ खड़े होंगे और फिर जन्नत-दोज़ख आंख से देख लेंगे तो सब ही ईमान ले आएंगे और रसूलों की बातों की तसदीक़ कर लेंगे, मगर उस वक़्त का ईमान और तस्दीक़ मोतबर नहीं है।

इंसानों को क़ब्र के अ़ज़ाब के न दिखाने और उसकी आवाज़ न सुनाने में यह मस्लहत भी मालूम होती है कि इंसान उसको बर्दाश्त नहीं कर सकते। अगर क़ब्र के अ़ज़ाब का हाल आंखों से देख लें या कानों से सुन लें तो बेहोश हों जाएं, जैसा कि हज़रत अबू सईद ﷺ की रिवायत में है कि रसूले ख़ुदा ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि नाफ़रमान की मैयत को जब लोग उठाकर चलते हैं तो वह कहता है, हाय मेरी बर्बादी! मुझे कहां ले जा रहे हो? उसकी इस आवाज़ को इंसान के सिवा हर चीज़ सुनती है और अगर इंसान सुन ले तो बेहोश हो जाए।[1]

हाँ, अल्लाह ने अपने रसूल ﷺ को बर्ज़ख़ की चीज़ें न सिर्फ़ बता दीं, बल्कि दिखा भी दीं, चूंकि आप में उन्हें देखकर बर्दाश्त करने की ताक़त मौजूद थी। यहां तक कि दोज़ख़ के मंज़र को देखकर भी आपके हँसनें-बोलने और सहाबा (रज़ि०) के साथ उठने-बैठने और खाने-पीने में फ़र्क़ न आता था। हज़रत अबू ऐयूब ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूल ख़ुदा ﷺ एक मर्तबा सूरज डूबने के बाद (मदीना मुनव्वरा से) बाहर तशरीफ़ ले गये। आपने एक आवाज़ सुनी (जो भयानक आवाज़ थी) उसको सुनकर आप ﷺ ने फ़रमाया कि यहूदियों को उनकी क़ब्रों में अ़ज़ाब हो रहा है।[2]

हज़रत ज़ैद बिन साबित ﷺ फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ एक मर्तबा अपने ख़च्चर पर सवार होकर क़बीला बनू नज्जार के एक बाग़ में तशरीफ़

1. बुख़ारी शरीफ़ 2. बुख़ारी व मुस्लिम शरीफ़

ले जा रहे थे और हम भी आपके साथ थे कि अचानक आपका ख़च्चर बिदक गया और ऐसा बिदका कि क़रीब था कि आप ﷺ को गिरा दे। वहीं पांच या छः क़ब्रें थीं। उनके बारे में रसूलुल्लाह ﷺ ने दर्याफ़्त फ़रमाया कि इन क़ब्र वालों को कौन पहचानता है? एक शख़्स ने अर्ज़ किया, मैं पहचानता हूं। आप ﷺ ने उससे पूछा यह कब मरे थे? उसने कहा कि शिर्क के ज़माने में मरे थे। आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि इंसानों को क़ब्रों में अज़ाब दिया जाता है, सो अगर मुझे डर न होता कि तुम आपस में दफ़्न करना छोड़ दोगे तो मैं ख़ुदा से ज़रूर दुआ करता कि तुमको (भी) इस क़ब्र के अज़ाब कुछ हिस्सा सुना दे, जिसे मैं सुन रहा हूं।[1]

चुग़ली करने और पेशाब से न बचने से अज़ाबे क़ब्र होता है

हज़रत इब्ने अब्बास ؓ से रिवायत है कि हज़रत रसूले करीम ﷺ का दो क़ब्रों पर गुज़र हुआ। आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया इनको अज़ाब हो रहा है और किसी बड़े मुश्किल काम की वजह से अज़ाब नहीं हो रहा है (बल्कि ऐसी मामूली बातों पर, जिनसे बच सकते थे)।

फिर आप ﷺ ने उन दोनों के गुनाहों की तफ़सील बताई कि इन दोनों में एक पेशाब करने में पर्दा नहीं करता था (और एक रिवायत में है कि पेशाब से बचता न था) और यह दूसरा चुग़ली करता फिरता था। फिर आप ﷺ ने एक तर टहनी मंगा कर बीच में से उसको चीर कर आधी एक क़ब्र में गाड़ दी और आधी दूसरी क़ब्र में। सहाबा (रज़ि०) ने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह! आपने ऐसा क्यों किया? इर्शाद फ़रमाया कि शायद इन दोनों का अज़ाब इस टहनी के सूखनें तक हल्का कर दिया जाए।[2]

1. मुस्लिम
2. मिश्कात शरीफ़, इसकी तश्रीह (व्याख्या) में कुछ उलमा ने फ़रमाया है कि तर टहनी के तस्बीह ख़ुदावंदी में लगे रहने की वजह से अज़ाब हल्का होने की उम्मीद पर आप ﷺ ने ऐसा किया।

कुछ ख़ास कामों पर ख़ास अज़ाब

बुख़ारी शरीफ़ में एक लंबी रिवायत है, जिसमें अल्लाह के रसूल ﷺ का एक ख़्वाब रिवायत किया गया है, जिसमें बर्ज़ख़ की दुनिया में ख़ास-ख़ास अज़ाबों का ज़िक्र है। आप ﷺ ने फ़रमाया कि मैंने आज रात ख़्वाब देखा है कि दो आदमी मेरे पास आए और मेरा हाथ पकड़ कर मुझको एक मुक़द्दस (पाक) ज़मीन की तरफ़ ले चले। देखता क्या हूं कि एक आदमी बैठा हुआ है और दूसरा खड़ा है और उसके हाथ में लोहे का ज़ंबूर है। उस बैठे हुए शख़्स के कल्ले को उससे चीर रहा है, यहां तक कि गुद्दी तक जा पहुंचता है, फिर दूसरे कल्ले के साथ भी यही मामला करता है और पहला कल्ला उसका ठीक हो जाता है, वह फिर उस पहले कल्ले के साथ ऐसा करता है। मैंने पूछा, यह क्या बात है? वे दोनों आदमी बोले, आगे चलो। हम आगे चले, यहां तक कि एक ऐसे शख़्स पर गुज़र हुआ जो लेटा हुआ है और उसके पत्थर से उस लेटे हुए आदमी का सर बहुत ज़ोर से फोड़ता है जब वह पत्थर उसके सिर पर दे मारता है, तो पत्थर लुढ़क कर दूर जा गिरता है। जब वह उसको उठाने के लिए जाता है, जो अभी तब लौटकर उसके पास आने भी नहीं पाता कि उसका सिर जैसा था, वैसा ही हो जाता है और फिर उसको उसी तरह फोड़ता है। मैंने पूछा, यह क्या है? वे दोनों बोले, आगे चलो। यहां तक कि हम एक ग़ार पर पहुंचे जो तन्दूर की तरह था और ऊपर बहुत तंग था, नीचे से चौड़ा था। उसमें आग जल रही थी और उसमें बहुत से नंगे मर्द और औरतें भरे हुए थे, जिस वक़्त वह आग ऊपर को उठती, तो उसके साथ वे सब ऊपर को उठ आते थे, यहां तक कि क़रीब निकलने को हो जाते। फिर जिस वक़्त आग बैठती तो वे सब भी नीचे चले जाते। मैंने पूछा यह क्या है? वे दोनों बोले, आगे चलो। हम दोनों आगे चले, यहां तक कि एक ख़ून की नहर पर पहुंचे। उसके बीच में एक शख़्स खड़ा था और नहर के किनारे पर एक शख़्स है, जिसके सामने बहुत-से पत्थर पड़े हैं। वह नहर के अंदर वाला शख़्स नहर के किनारे की तरफ़ आता है। जिस वक़्त वह

निकलना चाहता है, यह किनारे वाला शख़्स उसके मुंह पर पत्थर मारकर हटा देता है। मैंने पूछा यह क्या है? वे दोनों बोले, आगे चलो। हम आगे चले, यहां तक कि एक हरे-भरे बाग़ में आ पहुंचे। उसमें एक बड़ा पेड़ है और उसके नीचे एक बूढ़ा आदमी है और उसके बच्चे हैं। उस पेड़ के क़रीब एक और आदमी बैठा हुआ है और उसके सामने आग जल रही है, जिसे वह धौंक रहा है। फिर वह दोनों मुझको चढ़ाकर पेड़ के ऊपर ले गये। वहां एक घर पेड़ के बीच में बहुत उम्दा था, उसमें मुझे दाख़िल कर दिया। मैंने उस घर से अच्छा घर कभी नहीं देखा। उसमें बहुत से मर्द, बूढ़े, जवान, औरतें और बच्चे थे, फिर उससे बाहर लाकर और ऊपर ले गये, वहां एक जवान थे। मैंने उन आदमियों से कहा कि तुमने मुझको तमाम रात फिराया। अब बताओ कि ये सब क्या राज़ की बातें थीं। उन्होंने कहा, वह जो आपने देखा था जिसके कल्ले चीरे जाते थे वह आदमी झूठा है, जो झूठी बातें ब्यान करता था और वे बातें दुनिया में मशहूर हो जाती थीं। उसके साथ क़ियामत तक यों ही करते रहेंगे और जिसका सर फोड़ते हुए देखा, वह आदमी है कि अल्लाह तआ़ला ने उसको क़ुरआन का इल्म दिया। रात को उससे गाफ़िल होकर सो रहा था और दिन को उस पर अ़मल न किया। क़ियामत तक उसके साथ यही मामला रहेगा; और जिनको आपने आग के ग़ार में देखा वे ज़िना करने वाले लोग हैं; और जिनको ख़ून की नहर में देखा, वे सूद खाने वाले थे और पेड़ के नीचे जो बढ़े शख़्स थे, वह इब्राहीम عليه السلام थे और आग धौंक रहा था; वह दारोग़ा दोज़ख़ का मालिक है। पहला घर जिसमें आप दाख़िल हुए, वह आम मुसलमानों का है और दूसरा घर शहीदों का है। और मैं जिब्रील हूं और यह मीकाईल हैं। फिर बोले सर ऊपर उठाइये। मैं ने सर उठाया तो मेरे ऊपर एक सफ़ैद बादल नज़र आया बोले कि यह आपका घर है। मैंने कहा कि मुझे छोड़ दो, मैं अपने घर में दाख़िल हो जाऊं। बोले, अभी आपकी उम्र बाक़ी है, पूरी नहीं हुई। अगर पूरी हो चुकी होती तो अभी चले जाते।[1]

1. मिश्कात शरीफ़

फ़ायदाः जानना चाहिए कि नबियों का ख़्वाब वह्य होता है। ये तमाम वाक़िए सच्चे हैं। इस हदीस से कई दूसरी चीज़ों का हाल मालूम हुआ। एक झूठ का कि कैसी सख़्त सज़ा है, दूसरे आ़लिम बेअ़मल का, तीसरे ज़िना, चौथे सूद का। ख़ुदा सब मुसलमानों को इन कामों से बचाये रखे। (आमीन)

ज़मीन का मैयत से बात करना

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी ؓ रिवायत फ़रमाते हैं कि एक दिन रसूले ख़ुदा ﷺ बाहर तशरीफ़ लाये तो आप ﷺ ने लोगों को देखा कि खिलखिला कर हंस रहे हैं; जिसकी वजह से दांत बाहर निकले हुए हैं। उनका यह हाल देखकर आप ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि ख़बरदार! बिला शुबहः अगर तुम लज़्ज़तों को काटने वाली चीज़ यानि मौत को बहुत ज़्यादा याद करते तो तुमको मैं इस हाल में न देखता, इसलिए तुम लज़्ज़तों को काटने वाली चीज़ यानी मौत को कसरत से याद किया करो, क्योंकि क़ब्र पर कोई दिन ऐसा नहीं गुज़रता, जिस दिन वह यह न कहता हो कि मैं परायेपन का घर हूं और मैं तन्हाई का घर हूं और मैं मिट्टी का घर हूं और में कीड़ों का घर हूं।

फिर फ़रमाया कि जब मोमिन बन्दा दफ़न कर दिया जाता है, तो उस से क़ब्र कहती है कि मुबारक हो, तू अपने ही घर आया। समझ ले। बेशक तू मुझे उन सबसे ज़्यादा महबूब था, जो मुझ पर चलते हैं। सो जब तू आज मेरे सुपुर्द कर दिया गया है और मेरे पास आ गया है तो अब मेरा सुलूक देखेगा कि मैं तेरे साथ क्या अच्छा सुलूक करती हूं। इसकी जहां तक नज़र पहुंचती है, वहां तक क़ब्र फैल जाती है और उसके लिए जन्नत का एक दरवाज़ा खोल दिया जाता है। और जब फ़ाजिर या काफ़िर बन्दा दफ़न कर दिया जाता है, तो उससे क़ब्र कहती है कि तेरा आना बुरा आना है तू मुझे सबसे मब्ग़ूज़ (नापसंदीदा, दुश्मन) था र , अब जब तू मेरे सुपुर्द कर दिया गया है और आज मेरे बस में आ गया , अब तू देखेगा कि तुझ से क्या

मामला करती हूं। इसके बाद वह उसे इस तरह भींचती है कि उसकी दायीं पस्लियां बायीं पस्लियों में और बायीं पस्लियां दायीं पस्लियों में घुस जाती हैं। इसको हुज़ूरे अक्दस ﷺ ने इस तरह ज़ाहिर फ़रमाया कि अपने मुबारक हाथ की उंगलियां दूसरे हाथ की उंगलियों में दाख़िल फ़रमाईं।[1]

क़ब्र के अ़ज़ाब से बचे रहने वाले

हज़रत मुहम्मद ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि क़सम है उस ज़ात की जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है, जब मैयत को क़ब्र में रख दिया जाता है तो दफ़न करने के बाद जब लोग वापस होते हैं, तो वह उनके जूतों की आवाज़ सुनता है, सो अगर वह मोमिन होता है तो नमाज़ उसके सिरहाने आ जाती है और रोज़े उसके दाहिनी तरफ़ आ जाते हैं और ज़कात उसके बायीं तरफ़ आ जाती है और (नफ़्ल काम जो किए थे, जैसे) सद्क़ा, नफ़्ल नमाज़ और लोगों के साथ जो नेकी और भलाई की, वह उसके पैरों की तरफ़ आ जाती है। अगर उसके सिरहाने की तरफ़ से अ़ज़ाब आता है तो नमाज़ कहती है कि मेरी तरफ़ से जगह न मिलेगी, फिर उसकी दाहिनी तरफ़ से अ़ज़ाब आता है तो रोज़े कहते हैं कि हमारी तरफ़ से जगह न मिलेगी, फिर बायीं तरफ़ से अ़ज़ाब आता है, तो भले काम, सदक़ा और एहसान के काम जो लोगों के साथ किये थे, वे कहते हैं कि हमारी तरफ़ से जगह न मिलेगी।[2]

सूरः मुल्क और अलिफ़-लाम-मीम सज्दा पढ़ने वाला

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास ؓ से रिवायत है कि प्यारे नबी ﷺ के एक सहाबी ؓ ने एक क़ब्र पर ख़ेमा लगाया और उनको पता न था कि यह क़ब्र है। (खेमे में बैठे-बैठे) अचानक देखते क्या हैं कि इसमें एक इंसान है जो सूरः *तबारकल्लज़ी बियदिहिल मुल्क* पढ़ रहा है। पढ़ते-पढ़ते उसने पूरी सूरः ख़त्म कर दी। यह वाक़िया उन्होंने हज़रत रसूले करीम ﷺ की ख़िदमत

---

1. मिश्कात
2. तर्ग़ीब

में अर्ज़ किया तो आप ﷺ ने फ़रमाया कि यह सूरः अज़ाब रोकने वाली है (और) इसको अल्लाह के अज़ाब से बचा रही है।[1]

हज़रत अबू हुरैरः ؓ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया कि बिला शुबहा क़ुरआन में एक सूरः है जिसकी 30 आयतें हैं। उसने एक शख़्स की सिफ़ारिश की। यहां तक कि वह बख़्श दिया गया। फिर फ़रमाया कि वह सूरः *तबारकल्लज़ी बियदिहिल मुल्क* है।[2]

हज़रत ख़ालिद बिद मेअ्दान (ताबई) रह० सूरः *तबारकल्लज़ी बियदिहिल* मुल्क' और सूरः 'अलिफ़-लाम-मीम सज्दा' के बारे में फ़रमाया करते थे कि ये दोनों सूरतें अपने पढ़ने वालों के लिए क़ब्र में अल्लाह से झगड़ेंगी और दोनों में से हर एक कहेगी कि ऐ अल्लाह! अगर मैं तेरी किताब में से हूं तो इसके हक़ में मेरी सिफ़ारिश क़ुबूल फ़रमा और अगर मैं तेरी किताब में से नहीं हूं तो मुझे अपनी किताब से मिटा दे। यह भी फ़रमाते थे कि परिंदों की तरह अपने पढ़ने वाले पर फैला देंगी और उसे क़ब्र के अज़ाब से बचा लेंगी।[3]

इन दोनों सूरतों को क़ब्र के अज़ाब से बचाने में बड़ा दख़ल है। जैसा कि इस रिवायत से ज़ाहिर हुआ। आँहज़रत सैयदे आलम ﷺ इन दोनों सूरतों को पढ़े बग़ैर न सोते थे।[4]

फ़ायदाः जिस तरह सूरः *अलिफ़-लाम-मीम* और सूरः मुल्क क़ब्र के अज़ाब से बहुत ज़्यादा बचाने वाली हैं, उसी तरह चुग़लख़ोरी करना और पेशाब से न बचना, दोनों काम क़ब्र के अज़ाब में बहुत ज़्यादा डाल देने वाले हैं।

पेट के मर्ज़ में मरने वाला

हज़रत सुलैमान बिन सरूर ؓ फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने

---

1. मिश्कात शरीफ़
2. मिश्कात
3. मिश्कात
4. मिश्कात शरीफ़

इर्शाद फ़रमाया कि जिसको उसके पेट (के मर्ज़) ने क़त्ल किया, उसको क़ब्र में अज़ाब न दिया जाएगा।[1]

पेट के कई मर्ज़ हैं। इनमें से जो भी मौत की वजह बन जाए, उसको क़ब्र में अज़ाब न होगा। हर एक को हदीस का मज़मून शामिल है, जैसे प्यास का मर्ज़, हैज़ा, पेट का दर्द वग़ैरह।

जुमा की रात या जुमा के दिन मरने वाला

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उम्र ﷺ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि जो भी मुसलमान जुमे के दिन या जुमे की रात में मरता है, उसको ख़ुदा क़ब्र के फ़ित्ने से बचाये रखता है।[2]

रमज़ान में मरने वाला

हज़रत अनस बिन मालिक ﷺ फ़रमाते थे कि बिलाशुब्हा रमज़ान के महीनों में मुर्दों से क़ब्र का अज़ाब उठा लिया जाता है।[3]

जो मरीज़ होकर मरे

हज़रत अबू हुरैरः ﷺ रिवायत करते हैं कि आँहज़रत ﷺ ने फ़रमाया कि जो मर्ज़ की हालत में मरा, वह शहीद मरा या (फ़रमाया) वह क़ब्र के फ़ित्ने से बचा दिया जाएगा और सुबह-शाम उसे जन्नत की रोज़ी मिलती रहेगी।

मुजाहिद और शहीद

हज़रत मिक़दाम बिन मअ्दी कर्ब ﷺ से रिवायत है कि आँहज़रत

1. अहमद व तिर्मिज़ी
2. अहमद व तिर्मिज़ी
3. बैहक़ी

सैयदे आलम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि अल्लाह के पास शहीद के लिए छः इनाम हैं:—

1) ख़ून का पहला क़तरा गिरते ही बख़्श दिया जाता है और जन्नत में जो उसका ठिकाना है, वह उसे दिखाया जाता है,

2) और वह क़ब्र के अ़ज़ाब से बचा दिया जाता है,

3) और वह बड़ी घबराहट से बचा रहेगा (जो सूर फूंके जाने के वक़्त लोगों के होगी),

4) उसके सर पर इ़ज़्ज़त का ताज रखा जाएगा, जिसका (एक-एक) याक़ूत दुनिया और जो कुछ दुनिया में है, उस सबसे बेहतर होगा,

5) बेहतर हूरे ऐन[1] उसके जोड़े के लिए दी जाएंगी, और

6) और सत्तर रिश्तेदारों के हक़ में उसकी सिफ़ारिश क़ुबूल की जाएगी।

हज़रत सलमान फ़ारसी ﷺ रिवायत फ़रमाते हैं कि आँहज़रत ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया है कि अल्लाह तआ़ला के रास्ते में इस्लामी मुल्क की सरहद तक हिफ़ाज़त करने वाला अगर (इसी हालत में) मर गया, तो जो अ़मल वह करता था, उसका सवाब उसके लिए बराबर (क़ियामत तक) जारी रखा जाएगा और उसकी रोज़ी जारी रहेगी (जो शहीदों के लिए जारी रहती है) और क़ब्र में फ़ित्ना डालने वालों से अमन में रहेगा।[2]

हज़रत अबू ऐय्यूब ﷺ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि जो शख़्स दुश्मन से लड़ा और फिर क़दम जमाये रहा यहाँ तक की मक़्तूल हो गया (यानि शहीद हो गया) या फिर ग़ालिब हो गया, तो क़ब्र के अंदर फ़ित्ने में न डाला जाएगा।[3]

---

1. बड़ी-बड़ी आखों वाली हूरें
2. तिर्मिज़ी, इब्ने माजा
3. मिश्कात शरीफ़

एक शख़्स को ज़मीन ने क़ुबूल न किया

हज़रत अनस ﷺ से रिवायत है कि एक शख़्स आंहज़रत ﷺ का कातिब[1] था। वह इस्लाम से फिरकर मुश्रिकों से जा मिला। तो हुज़ूर अक़्दस ﷺ ने उसके हक़ में बद-दुआ फ़रमायी कि उसको ज़मीन क़ुबूल न करेगी। इसके बाद जब वह मर गया तो हज़रत अबू तल्हा ﷺ उस क़ब्र की तरफ़ तशरीफ़ ले गये तो उसे क़ब्र से बाहर पड़ा हुआ पाया। यह देखकर उन्होंने वहां के लोगों से यह मालूम फ़रमाया कि माजरा क्या है? तो उन्होंने बताया कि उसको हमने कई बार दफ़न किया, मगर हर बार उसको ज़मीन ने बाहर फेंक दिया, इसलिए हमने बाहर ही छोड़ दिया।[2]

कुछ उस्तादों से इस किताब के लिखने वाले ने यह वाक़िआ सुना है कि एक आ़लिम की क़ब्र किसी ज़रूरत से खोदी गई जो मदीना मुनव्वरा में थी तो उसमें एक लड़की की लाश निकली। देखने वालों में से कुछ लोग इस लड़की को पहचानते थे और उनको मालूम था कि यह फ़्लां ईसाई की लड़की है। चुनांचे उन्होंने वहां पहुंच कर उसके मां-बाप से उसका हाल पूछा और क़ब्र मालूम की, तो उन्होंने क़ब्र भी बताई और यह कहा कि यह दिल से मुसलमान थी और मदीना मुनव्वरा में मरने की ख़्वाहिश रखती थी। फिर उसकी क़ब्र खुदवाकर देखी गई, तो उस में उस आ़लिम की लाश निकली। जिसकी क़ब्र में वह लड़की मदीना मुनव्वरा में देखी गई थी। फिर उस आ़लिम की बीवी से उनका अ़मल मालूम किया तो उसने बताया कि वह बड़े नेक आदमी थे। यह बात ज़रूर थी कि वह यों कहा करते थे कि ईसाई मज़हब में यह बात बड़ी आसानी की है कि उनके यहां जनाबत का ग़ुस्ल[3] ज़रूरी नहीं है। इसी वजह से वह उस लड़की की क़ब्र में पहुंचाये गये।

---

1. लिखने वाला
2. बुख़ारी व मुस्लिम शरीफ़
3. बीवी के साथ सोहबत करने की नापाकी का नहाना

बर्ज़ख़ में सुबह-शाम जन्नत या दोज़ख़ का पेश होना

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर ﷺ रिवायत करते हैं कि आंहज़रत सैयदे आलम ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि बिला शुबहा जब तुममें से कोई मर जाता है तो सुबह-शाम उसका ठिकाना जन्नत या दोज़ख़ उसके सामने पेश किया जाता है। अगर वह जन्नती है तो सुबह-शाम जन्नत पेश की जाती है और अगर वह दोज़ख़ी है तो सुबह-शाम उसके सामने दोज़ख़ पेश की जाती है और उसका ठिकाना दिखा कर उससे कहा जाता है कि यह तेरा ठिकाना है। (फिर फ़रमाया कि) क़ियामत के दिन तक (जब कि ख़ुदा उसे क़ब्र से उठायेगा), हर सुबह-शाम ऐसा ही होता रहेगा।[1]

आँहज़रत ﷺ पर उम्मत के आ़माल पेश किये जाते हैं

हज़रत अ़ब्दुल्ला बिन मस्ऊ़द ﷺ रिवायत करते हैं कि आँहज़रत ﷺ ने इर्शाद फ़रमाया कि मेरी ज़िंदगी तुम्हारे लिए बेहतर है और मेरी वफ़ात तुम्हारे लिए बेहतर है, तुम्हारे आ़माल मुझपर पेश होंगे। पस जो भलाई (तुम्हारी तरफ़ बेहतर से पेश की जाएगी, जिसे) मैं देखूंगा तो उसपर अल्लाह की तारीफ़ करूंगा और जो कोई बुराई देखूंगा (जो तुम्हारी तरफ़ से पेश की जाएंगी) तो तुम्हारे लिए अल्लाह तआ़ला से मग़्फ़िरत की दुआ़ करूंगा।[2]

रौज़ा-ए-मुत्तह्हरा के पास दरूद व सलाम पढ़ा जाए तो आँहज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ख़ुद सुनते हैं और जो कोई दूर से दरूद व सलाम भेजे, उसको फ़रिश्ते पहुंचा देते हैं

हज़रत अबू हुरैरः ﷺ से रिवायत है कि आँहज़रत सैयदे आ़लम ﷺ ने फ़रमाया कि जो कोई मुझपर मेरी क़ब्र के पास पढ़ेगा, मैं उसको

1. बुख़ारी व मुस्लिम 2. जमउल फ़वाइद

सुनूंगा और जो कोई मुझ पर दूर से दरूद भेजे, वह दरूद मुझे पहुंचा दिया जाता है।[1]

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद ﷺ से रिवायत है कि आंहज़रत ﷺ ने फ़रमाया कि बिला शुब्हा अल्लाह के बहुत से फ़रिश्ते हैं जो ज़मीन में गश्त लगाते फिरते हैं (और) मेरी उम्मत का सलाम मेरे पास पहुंचाते हैं।[2]

दुनिया में क़ायदा है कि मौजूद लोग आपस में एक दूसरे को सलाम करते हैं और जो दूर होते हैं, उनको डाक से या आदमी की ज़रिए सलाम भेजते हैं। अल्लाह तआला ने अपनी कामिल (पूरी) रहमत से यह सिलसिला जारी रखा है कि जो मुसलमान अपने नबी ﷺ पर दूर से सलाम भेजे, तो उसको फ़रिश्तों के ज़रिए पहुंचा देते हैं।

इन हदीसों से जहां यह मालूम होता है कि आँहज़रत ﷺ को बर्ज़ख़ी ज़िंदगी में भी अपनी उम्मत से तअ़ल्लुक़ बाक़ी है और यह कि अल्लाह तआ़ला ने इस उम्मत को यह शर्फ़ (बुज़ुर्गी, बुलन्दी) बख़्शा है कि फ़रिश्ते को इस काम के लिए मुक़र्रर फ़रमाया है कि उम्मतियों का सलाम फख़्रे कायनात मुहम्मद ﷺ को पहुंचा दें। वहां यह भी मालूम हुआ कि गो हज़रात अंबिया-ए-किराम ज़िंदा हैं, लेकिन खुदा की पनाह! हर जगह न हाज़िर हैं, न सब कुछ देख रहे हैं और न दूर की बात को सुनते हैं। जब नबियों (अ़लैहिमुस्सलाम) के बारे में यह साबित है कि हर जगह न हाज़िर हैं, न देख सकते हैं और न हर आवाज़ सुनने वाले हैं तो उन औलिया-अल्लाह के बारे में ऐसा ख़्याल करना तो बिल्कुल ही ग़लत और बिद्अ़त होगा, जो अल्लाह के चुने हुए बुज़ुर्ग- पैग़म्बरों के सहाबियों (साथियों) से भी कम दर्जे के हैं।

1. बैहक़ी
2. हाकिम, नसाई शरीफ़ वग़ैरह

नबियों की बर्ज़ख़ी ज़िंदगी

हज़रात अंबिया किराम (अलै०) इस दुनिया से तशरीफ़ ले जाने के बाद भी ज़िंदा ही हैं। माना कि शहीदों के बारे में क़ुरआन शरीफ़ में आया है कि इनको मुर्दा मत कहो, लेकिन नबियों के बारे में भी हदीस की-बहुत सी रिवायतों से साबित है कि इस दुनिया से चले जाने के बाद भी ज़िन्दा ही हैं।

मशहूर मुहद्दिस[1] अ़ल्लामा बैहक़ी (रह०) और मशहूर मुसन्निफ़[2] अ़ल्लामा सुयूती रह० ने इस मौज़ू[3] पर एक-एक रिसाला (किताब) लिखा है और 'हयातुल अंबिया' (नबियों की ज़िंदगी) को साबित किया है।

अ़ल्लामा सुयूती (रह०) ने अपने फ़त्वे में लिखा है कि–

'प्यारे नबी ﷺ और दूसरे तमाम अबिंया किराम के क़ब्रों में ज़िंदा होने की दलीलों के साथ हमको क़तई जानकारी है और इस बारे में तवातुर[4] की हदीसें भी पहुंच चुकी हैं।

इमाम क़ुर्तबी ने अपनी किताब 'तज़्किरा' में फ़रमाया है कि हज़रात अंबिया-ए-किराम की मौत का हासिल इतना समझो कि वे हमारी नज़रों से छिपा दिए गये हैं और उनका हाल हमारी निस्बत ऐसा है जैसे फ़रिश्तों का हाल है (कि हम फ़रिश्तों को देख नहीं सकते हैं)।

मुहद्दिस बैहक़ी (रह०) ने फ़रमाया कि हज़रात अंबिया-ए-किराम की रूहें क़ब्ज़ करने के बाद फिर वापस कर दी गयीं इसलिए वे अपने रब के हुज़ूर में ज़िंदा हैं जैसा कि शहीद ज़िंदा हैं।

हज़रत अनस ؓ से रिवायत है कि आँहज़रत सैयदे आ़लम ﷺ ने

---

1. हदीस के माहिर
2. लेखक
3. विषय
4. बीच की कड़ियों में से किसी रावी को छोड़े बग़ैर

फ़रमाया कि अंबिया ﷺ ज़िंदा हैं, अपनी क़ब्रों में नमाज़ पढ़ते हैं[1]। यह नमाज़ तकलीफ़े शरई की वजह से नहीं है, बल्कि लज़्ज़त हासिल करने के लिए हैं।

हज़रत अबूदर्दा ؓ से रिवायत है कि आँहज़रत सैयदे आलम ﷺ ने फ़रमाया कि जुमा के दिन मुझ पर दरूद ज़्यादा-से-ज़्यादा भेजा करो क्योंकि यह दिन मश्हूद है, जिसके मानी यह हैं कि इसमें फ़रिश्तों का आना (ज़्यादा-से-ज़्यादा) होता है, (फिर इर्शाद फ़रमाया कि) बेशक तुम में से जो भी आदमी मुझ पर दरूद भेजता है, उसका दरूद मेरे सामने पेश होता रहता है जब तक कि वह उसमें लगा हुआ हो। सवाल किया गया कि या रसूलुल्लाह! वफ़ात के बाद क्या होगा? इर्शाद हुआ कि वफ़ात के बाद मुझ पर दरूद पेश किया जाता रहेगा, क्योंकि उस आलम (दुनिया) में जाकर भी अल्लाह के रसूल ﷺ ज़िंदा रहते हैं और यह ज़िंदगी रूहानी नहीं होती बल्कि जिस्मानी होती है। (क्योंकि) बेशक अल्लाह ने ज़मीन पर यह हराम फ़रमा दिया है कि नबियों के जिस्मों को खा जाये। अल्लाह का नबी ज़िंदा रहता है और उसको रोज़ी भी दी जाती है।[2]

इस मुबारक हदीस से मालूम हुआ कि हज़रात अंबिया-ए-किराम अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम इस दुनिया से इन्तिक़ाल फ़रमा कर जिस्मानी ज़िंदगी के साथ ज़िंदा हैं और रोज़ी भी पाते हैं। यह रोज़ी उसी दुनिया के मुनासिब है। शहीदों के बारे में भी रोज़ी का मिलना आया है, लेकिन हज़रात अंबिया-ए-किराम (अलै०) की ज़िंदगी और उनका रोज़ी दिया जाना शहीदों के मुक़ाबले में कामिल (पूर्ण) है। हज़रत शाह अ़ब्दुल हक़ साहब मुहद्दिस देहलवी (रह०) ने 'अश्अ़तुल्लम्आ़त' शरह मिश्कात में लिखा है:—

'नबियों की ज़िंदगी का ऐसा मस्अला है, जिस पर सबका इत्तिफ़ाक़

1. अबुयाला
2. इब्ने माजा

(सहमत) है, किसी को इसमें इख़्तिलाफ़ नहीं और यह हयाते जिस्मानी है जैसा कि दुनिया में थी। उनकी ज़िंदगी रूहानी या मानवी (अर्थ निरूपित) न समझी जाए।'

हज़रत इब्ने अ़ब्बास ﷺ रिवायत फ़रमाते हैं कि एक बार हम रसूलुल्लाह ﷺ के साथ मक्के और मदीने के बीच सफ़र कर रहे थे। आपने एक वादी (घाटी) के बारे में पूछा कौन-सी वादी है? मौजूद लोगों ने जवाब दिया कि यह 'वादी-ए-रिज़्क़' (यानी रोज़ी की घाटी है) आपने इर्शाद फ़रमाया कि गोया मैं देख रहा हूं मूसा عليه السلام की तरफ़। यह फ़रमाकर उनके रंग और बालों की हालत कुछ ब्यान फ़रमाई (और फ़रमाया कि वह) इस हाल में (नज़र आ रहे) हैं कि अपनी दोनों उंगलियां दोनों कानों में दिए हुए हैं (और) अपने रब के नाम का तल्बियः[1] ज़ोर-ज़ोर से पढ़ते हुए इस वादी से गुज़र रहे हैं।

हज़रत इब्ने अ़ब्बास ﷺ फ़रमाते हैं कि इसके बाद हम और आगे चले यहां तक कि एक वादी आयी। उसके बारे में फ़ख़्रे दो आ़लम ﷺ ने सवाल फ़रमाया कि यह कौन-सी वादी है? हाज़िर लोगों ने जवाब दिया कि यह वादी 'हरशा' (नामी) है या बजाए 'हरशा' के 'लुफ़्त' कहा। आँहज़रत ﷺ ने फ़रमाया कि गोया मैं यूनुस عليه السلام को देख रहा हूं कि सुर्ख़ ऊटंनी पर सवार हैं उनके जिस्म पर उनका जुब्बा है और उनकी ऊंटनी की लगाम पेड़ की छाल की है। तल्बियः पढ़ते हुए उस घाटी से गुज़र रहे हैं।[2]

इस मुबारक हदीस से साबित हुआ कि आंहज़रत ﷺ ने हज़रत मूसा عليه السلام और हज़रत यूनुस عليه السلام को तल्बियः पढ़ते हुए देखा, मालूम हुआ कि हज़रात अंबिया किराम की बर्ज़ख़ी ज़िंदगी इतनी कामिल और इतनी बुलंद है कि इस दुनिया में तशरीफ़ ला सकते हैं और हज की ज़रूरी रस्में अदा कर

1. लब्बैक व सादैक कहना
2 मुस्लिम शरीफ़

सकते हैं और उनका देखा जाना भी मुम्किन है। कुछ बुज़ुर्गों से जो यह नक़ल किया गया है कि उन्होंने आंहज़रत ﷺ को बेदारी में देखा तो यह झुठलाने की चीज़ नहीं है। अगर कोई तस्दीक़ न करे तो झुठलाना भी मुनासिब नहीं है। मे'राज शरीफ़ का वाक़िया जो हदीस की किताबों में आया है, उसी में यह भी है कि सैयदे आ़लम ﷺ ने फ़रमाया कि मैंने मूसा, ईसा और इब्राहीम (अलै०) को खड़े हुए नमाज़ पढ़ते देखा। इतने में नमाज़ का वक़्त आ गया तो मैं उनका इमाम बना।[3]

उस वक़्त आँहज़रत ﷺ अपनी दुनियावी ज़िंदगी ही में थे और जिन नबियों को आपने नमाज़ पढ़ाई, वे बर्ज़ख़ी ज़िंदगी में थे। हज़रत ईसा عليه السلام गो इस दुनिया में नहीं हैं, मगर बर्ज़ख़ी ज़िंदगी में भी नही हैं बल्कि उनकी यही दुनिया की ज़िंदगी उस वक़्त तक जारी मानी जाएगी, जब तक कि दोबारा तशरीफ़ ला कर वफ़ात न पा जाएं।

उहुद के कुछ शहीदों के जिस्म वर्षों के बाद भी सही-सालिम पाये गये

मुअत्ता इमाम मालिक (रह०) में है कि उम्रू बिन जमूह رضي الله عنه और अ़ब्दुल्लाह बिन उम्रू رضي الله عنه की क़ब्र को पानी के बहाव ने खोद दिया था। ये दोनों अंसारी थे और उहुद की लड़ाई में शहीद हुए थे और एक ही क़ब्र में दोनों को दफ़्न कर दिया गया था। जब पानी ने क़ब्र खोद डाली तो दूसरी जगह दफ़्न करने के लिए उनकी क़ब्र खोदी गई तो इस हालत में पाये गये कि उनके जिस्मों में ज़रा भी फ़र्क़ न आया था और ऐसा लगता था कि जैसे कल ही वफ़ात पाई है। यह वाक़िया उस वक़्त का है जबकि उहुद की लड़ाई

1. मुस्लिम शरीफ़
2. मुख़्तसर तज़्किरा अल-क़ुर्तबी

को 46 साल गुज़र चुके थे।

हज़रत मुआविया ﷺ ने अपने अमीर होने के ज़माने में मदीना तैयबा में नहर निकालने का इरादा फ़रमाया तो उसकी गुज़रगाह में उहुद का क़ब्रिस्तान पड़ गया। हज़रत मुआविया ﷺ ने एलान फ़रमा दिया कि अपने-अपने रिश्तेदारों की लाशें यहां से उठाकर दूसरी जगह कर लें। जब इस मक़सद से लाशें निकाली गयीं तो बिल्कुल अपनी असली हालत पर तर-व-ताज़ा मालूम होती थीं। उसी वक़्त यह वाक़िया पेशा आया कि खुदाई करते हुए हज़रत हम्ज़ा (रज़ि०) के क़दम मुबारक में कुदाल लग गई तो उसी वक़्त ख़ून जारी हो गया। यह वाकिया उहुद की लड़ाई के पचास साल के बाद का है।[1]

उहुद के शहीदों के अलावा और भी उम्मत के दूसरे बुज़ुर्गों के बारे में सियर[1] व तारीख़ की किताबों से यह साबित है कि दफ़्न करने के बाद जब वर्षों के बाद देखे गये, तो उनके जिस्मों में कोई तबदीली न हुई थी। हज़रात अंबिया-ए-किराम (अलै०) के बारे में तो हदीस शरीफ़ में क़तई फ़ैसला है कि उनके जिस्मों को ज़मीन गला नहीं सकती लेकिन किसी ग़ैर नबी को भी अल्लाह तआला यह शर्फ़ बख्शें तो उनकी रहमत और क़ुदरत से कुछ नामुम्किन नहीं है :—

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُكَ خَيْرَ الْحَيَاتِ وَخَيْرَ الْمَمَاتِ وَاَنْ تَغْفِرَلِیْ وَتَرْحَمَنِیْ
وَاَنْ تَتُوْبَ عَلَیَّ اِنَّكَ اَنْتَ رَبِّیْ۔ اَنْتَ مَوْلَایَ وَاَنْتَ لِیْ نِعْمَ الْوَكِيْلَ
وَصَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی خَيْرِ خَلْقِهٖ سَيِّدِنَا وَسَنَدِنا وَمَوْلَانَا مُحَمَّدٍ وَّاٰلِهٖ
وَصَحْبِهٖ اَجْمَعِيْنَ ط

अल्लाहुम्म म इन्नी अस्अलु क ख़ैरल हयाति व ख़ैरल ममाति व अन् तग़्फ़िर ली व तर्हमनी व अन ततू ब अ़लै

1. सीरत, जीवन-चरित्र

य इन्न क अन्त रब्बी अन्त मौला य व अन त ली निअ्म्ल वकील व सल्लल्लाहु तआला अ़ला ख़ैरि ख़ल्किही सैयिदिना व स न दिना व मौलाना मुहम्मदिंव व आलिही व सह्बिही अज्मईन।

किसी इन्सान के लिए जन्नत या जहन्नम का फैसला मैदाने हश्र में हिसाब किताब हो जाने के बाद ही होगा। इन्सान के मरने के बाद से लेकर हिसाब किताब का मरहला पेश आने तक इन्सान की रूह जहां रहती है वह "आलमे बर्ज़ख़" कहलाता है।

यह भी एक मुस्तकिल दुनिया और एक बहुत लम्बा अर्सा है। मौत का मरहला, क़ब्र की मंज़िल और वहां के सवाल व जवाब और उसके नतीजे में नेमतों या आफ़तों की शुरुआत, यह तमाम चीजें किताबुल्लाह और सुन्नते रसूल ﷺ में बयान फ़रमाई गई है।

इस मुख़्तसर सी किताब में आप को आलमे बर्ज़ख़ के तमाम ज़रूरी हालात मुस्तनद किताबों के हवालों से मिलेंगें।